Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

919

येनात्मा संप्रसीदति ।

ॐ

देवयजन

(यजतं ते अन्यत् । शुक्रं ते अन्यत् ।।)

कैवल्यधाम, लोनावला – ४१० ४०३.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

येना

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

येनात्मा संप्रसीदति ।

ॐ

दैवयाजन

(यजतं ते अन्यत् । शुक्रं ते अन्यत् ।।)

कैवल्यधाम, लोनावला – ४१० ४०३.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकाशक–
कैवल्यधाम
लोनावला ४१० ४०३.

●

सप्तम आवृत्ति
गुरुपौर्णिमा, १२ जुलै १९८४.

●

मूल्य रु. ८–००

●

मुद्रक–
योग मीमांसा मुद्रणालय
लोनावला ४१० ४०३.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः ।

नयनं गलदश्रुधारया । वदनं गद्‌गदरुद्धया गिरा ।।
पुलकैर्निचितं कदा वपुः । तव नामग्रहणे भविष्यति ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ नमः सर्वांतर्यामिणे ।

" नेदं यदिदमुपासते । "

यजन के अन्दर पूजन और हवन इन दोनों का समावेश हो जाता है, और इनमें होनेवाली सब क्रियायें देवताओं के लिए होने से उसे देवयजन, और जो स्थान पर हो रही है उसे भी देवयजन कहते है ।

पूजन या हवन यह तो सिर्फ बाहर होनेवाली क्रियायें हैं, किन्तु उसके लिए जरूरी भाव तो अन्दर की ओर रहता है। सगुणता के सहारे पुरुषाकार (प्रतिमा) कीं उपासना को पूजन और ज्योति के सहारे होनेवाली क्रिया (उपासना) को हवन कहते हैं ।

यज्ञ, यह देवयजन की प्रक्रियाओं का एक छोटा नाम है। जिसमें दो प्रकार की प्रणालिका अनादि काल से चलती आयी है, एक है तत्व-प्रधान उपासना और दूसरी है विस्तार-प्रधान उपासना। तत्व–प्रधान उपासना में व्रत, नियम, संयम अष्टसात्विक भाव इत्यादि को महत्व दिया जाता है और इस प्रणालिको स्वीकार करके चलनेवाले को अध्यात्मी कहते हैं। और इस प्रकारसे किये हुए यज्ञ को 'अध्वर' संज्ञा दी जाती है। जब कि विस्तार–प्रधान उपासना रजोगुण और तमोगुण के आधार पर होती है। इस में हवि द्रव्य का विस्तार, कुंड, मंडप का विस्तार, सदस्यों का विस्तार इत्यादि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकार प्रमुख होते है और साथ साथ निश्चित संख्या को भी महत्व दिया जाता है। इसे 'याग' यह संज्ञा है। इसका भी महत्व है, परन्तु वह दर्शनीय, प्रेक्षणीय होता है। इससे प्रचार और प्रसार कार्य संपन्न होता है, प्रणालिका बन जाती है और संप्रदाय खडे होते हैं।

ध्वर यानी कि हिंसा और उससे रहित वह अध्वर। हिंसा रहित, द्रोह रहित—समत्व भावसे की हुई परमात्मा की उपासना, जिसका प्रतीक है अग्नि और इसलिए अग्नि की उपासना।

वैराग्यशील मुनि इसप्रकार की अग्नि की उपासना करते थे और उसका फल—अध्यात्म प्राप्ति।

\+ \+ \+ \+

कैवल्यधाम—राजकोट में महर्षि पतंजली प्रणीत क्रिया-योग का व्यवस्थित अभ्यास बहुत वर्षोंसे हो रहा है। जिसमें ईश्वर प्रणिधान का सूत्र, पूजन और हवन के रूप में सुसंगत और स्थिर रूपसे रखा हुआ है।

पूजन और हवन दोनो एकसाथ मिलकरही देवयजन है। इसके लिए मंत्र निश्चित कर के 'देवयजन' नामक पुस्तक प्रसिद्ध हुयी है। देवयजन की क्रियाओंको जाननेवाले अनेक लोगोंने इस संग्रह की बहुत प्रशंसा की है। इस पुस्तक को छह आवृत्तियाँ बहुत ही अल्प समय में समाप्त हो चुकी है। इसलिए इस बार फिर एक नयी आवृत्ति, कुछओर बढाकर, आपके सामने रखते हुए आनन्द होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बंवई के सम्राट हॉटेल वाले श्रीमान गोपीचंद गुप्ताजी की सहायतासे यह आवृत्ति प्रकाशित होती है ।

जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक बहुतही उपयोगी तथा मार्गदर्शक हुंगी । किन्तु यह बात ध्यान में रहनी चाहिये कि इस पुस्तक में दिये हुए सभी मंत्रो का पाठ अपने आप सीखने से कभी नही आयेगा, चाहे आप संस्कृत के पाठक भी क्यों न हो । इसके लिये जानकार से अथवा यहां पर आकर चार आठ दिनमे सीखकर जाना चाहिये । इसमें प्रमाद नही रखना चाहिये ।

\+ \+ \+ \+

तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः। 'प्राणायाम परंतपः' 'प्राणसंरोधात् नास्ति परंशुचिः' अर्थात् प्राणायाम ही परम तप हैं । 'प्रणवः सर्ववेदेषु' 'ओमित्येकं सर्वं' इत्यादि वचनो से यह सिद्ध होता है कि प्रणव ही स्वाध्याय है । ईश्वर प्रणिधान से यथा शक्ति विष्णूरुद्रादि पूजन करने को कहा है। इससे देवयजन की प्रक्रिया सिद्ध होती है ।

ऊपरके तीन क्रियाभागों को पतंजलिने क्रियायोग यह संज्ञा दी है । चित्तके विक्षेप और उससे उदित होनेवाले अनेक विध क्लेश, कम करने का महान सामर्थ्य इस क्रियायोग में है । ध्यानाभ्यास का आरम्भ करने के पहले इस तीन प्रकारके क्रियायोग का अभ्यास करना बहुत जरूरी है । और जो कोई साधक इस प्रकार का अभ्यास किये बिना यदि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकार प्रमुख होते है और साथ साथ निश्चित संख्या को भी महत्व दिया जाता है। इसे 'याग' यह संज्ञा है। इसका भी महत्व है, परन्तु वह दर्शनीय, प्रेक्षणीय होता है। इससे प्रचार और प्रसार कार्य संपन्न होता है, प्रणालिका वन जाती है और संप्रदाय खडे होते हैं।

ध्वर यानी कि हिंसा और उससे रहित वह अध्वर। हिंसा रहित, द्रोह रहित–समत्व भावसे की हुई परमात्मा की उपासना, जिसका प्रतीक है अग्नि और इसलिए अग्नि की उपासना।

वैराग्यशील मुनि इसप्रकार की अग्नि की उपासना करते थे और उसका फल–अध्यात्म प्राप्ति।

\+ + + +

कैवल्यधाम–राजकोट में महर्षि पतंजली प्रणीत क्रिया-योग का व्यवस्थित अभ्यास बहुत वर्षोंसे हो रहा है। जिसमें ईश्वर प्रणिधान का सूत्र, पूजन और हवन के रूप में सुसंगत और स्थिर रूपसे रखा हुआ है।

पूजन और हवन दोनो एकसाथ मिलकरही देवयजन है। इसके लिए मंत्र निश्चित कर के 'देवयजन' नामक पुस्तक प्रसिद्ध हुयी है। देवयजन की क्रियाओंको जाननेवाले अनेक लोगोंने इस संग्रह की बहुत प्रशंसा की है। इस पुस्तक को छह आवृत्तियाँ बहुत ही अल्प समय में समाप्त हो चुकी है। इसलिए इस वार फिर एक नयी आवृत्ति, कुछओर बढाकर, आपके सामने रखते हुए आनन्द होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बंवई के सम्राट हॉटेल वाले श्रीमान गोपीचंद गुप्ताजी की सहायतासे यह आवृत्ति प्रकाशित होती है ।

जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक बहुतही उपयोगी तथा मार्गदर्शक हूगी । किन्तु यह बात ध्यान में रहनी चाहिये कि इस पुस्तक में दिये हुए सभी मंत्रो का पाठ अपने आप सीखने से कभी नही आयेगा, चाहे आप संस्कृत के पाठक भी क्यों न हो । इसके लिये जानकार से अथवा यहां पर आकर चार आठ दिनमे सीखकर जाना चाहिये । इसमें प्रमाद नही रखना चाहिये ।

\+ \+ \+ \+

तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोगः। 'प्राणायाम परंतपः' 'प्राणसंरोधात् नास्ति परंशुचिः' अर्थात् प्राणायाम ही परम तप हैं। 'प्रणवः सर्ववेदेषु' 'ओमित्येकं सर्वं' इत्यादि वचनो से यह सिद्ध होता है कि प्रणव ही स्वाध्याय है। ईश्वर प्रणिधान से यथा शक्ति विष्णूरुद्रादि पूजन करने को कहा है। इससे देवयजन की प्रक्रिया सिद्ध होती है।

ऊपरके तीन क्रियाभागों को पतंजलिने क्रियायोग यह संज्ञा दी है। चित्तके विक्षेप और उससे उदित होनेवाले अनेक विध क्लेश, कम करने का महान सामर्थ्य इस क्रियायोग में है। ध्यानाभ्यास का आरम्भ करने के पहले इस तीन प्रकारके क्रियायोग का अभ्यास करना बहुत जरूरी है। और जो कोई साधक इस प्रकार का अभ्यास किये बिना यदि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ध्यानाभ्यास में लगे, तो उन्हे अनेक विघ्नों से सामना करना पड़ता हे। इसका कारण यह हे कि चित्त में रही हुई अशुद्धिका शुद्धिकरण नहीं किया गया था। इसलिए क्रियायोग चित्त में रही अशुद्धि का निवारण करने का प्रथम अंग बन जाता हे।

प्राण और उसकी क्रियाशीलता, चित्त और उसका बर्ताव, इन दोनों का अत्यंत घनिष्ठ संबंध होने से प्राण और चित्तकी थोडी कसरत करना आवश्यक है।

ईश्वरप्रणिधान यानी देवयजन से, सार्वभौम, सबसे परे ऐसी महान शक्ति का आधार मनको मिलता है, जिसका परिणाम है संतोष, शान्ति।

इसी तरह शान्ति की शीतल छाया प्राप्त होने के वाद ध्यान–समाधि का आगे का भाग फलीभूत होता है, अन्यथा उपद्रवों के विक्षेप खडे ही खडे रहते हैं।

कहा है कि "अर्चत प्रार्चत प्रियमेधास अर्चत। पुरं न, धृष्णु अर्चत' (ऋग्वेद) पूजन करते रहो, प्यारे भाईओं, पूजन करते रहो। कलेवरको–मूर्तिकोही न पकड रखो। धृष्णु–अर्थात विष्णुतत्व की मूर्तिमें पूजा करो। मूर्तिकी पूजा और मूर्ति में पूजा इसका विवेक जरूर रखना चाहिये, इससे कर्मजड न रहकर आप सजाग कर्मनिष्ठ बनेंगे। वही अध्यात्म का मार्ग है, उसे न छोडो।

● ●

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

स्वस्तिमंत्रा । १
पावमानीय--अपांमंत्राः। आयतन अनुवाक । २–३
रुद्रोपासना। ५
महापुरुषविद्या । ७
कृष्णाष्टक। ८
श्रीशंकराचार्य स्तवन। दक्षिणामुर्तिस्तवन। १०–१२
श्रीशारदा स्तवन । १३
ॐ स्तवन। १४
गीता अध्याय १५। १५
पूजा प्रयोग। १७
पुरुषसूक्त । १८
श्रीसूक्त । १९
अभिश्रवणं । २२
दशावतार स्तुति । २४
होम प्रयोग। २९
पूर्णाहूति–वसोर्धारा–वह्निष्पवमान । ३८
पिण्डपितृयज्ञ । ४१
देवता गणेश। ४७
अथ रुद्र सूक्तानि। ४९
शिवसंकल्पसूक्त । ५७

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अथ सौर सूक्तानि ।	५८
अथ पवमान सूक्तम् ।	६४
देवीसूक्त ।	६६
हिरण्यगर्भसूक्त ।	६७
अग्निसूक्त ।	६८
श्रीविष्णुसहस्रनाम ।	६९
भीष्म स्तवराज ।	७८
अनुस्मृति ।	८५
गजेन्द्रमोक्ष ।	९१

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आद्य शंकराचार्य

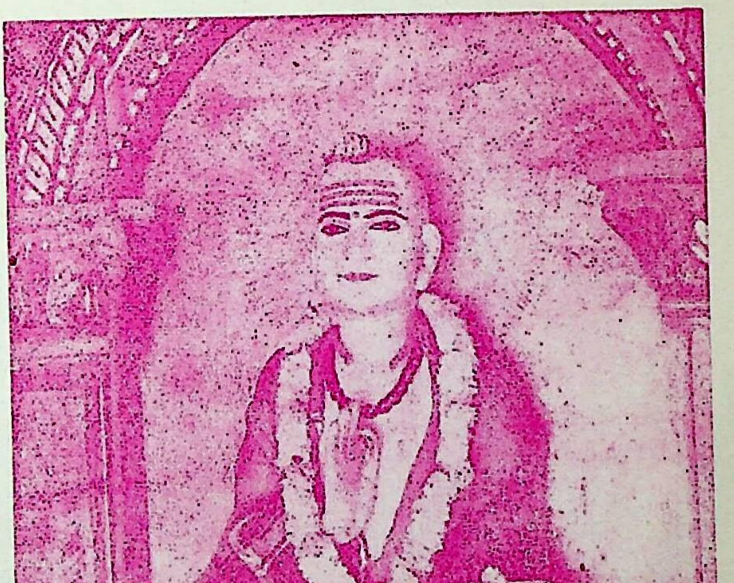

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रीमत् स्वामी कुवलयानंदजी

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः
अध्यात्मे भौतिके चापि दक्षः सर्वेषु कर्मसु

स्व. स्वामी श्रीकुवलयानन्दजी

तथा

अन्य सर्व अध्यात्मी गुरुजनो को

–कि जिन्होने "देवयजन" का बहुत प्रेमसे
स्वीकार करके अत्यंत संतोष व्यक्त किया था–

समर्पण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

संप्रसाद – अध्यात्मप्रसाद

↑

संप्रयोग

↑

प्रयोग

|

- ↑ **लोमविलोम–भस्त्रिका**
  - मंद–शीघ्र
  - |
  - **प्राणायाम**
  - |
  - **तपः**
- ↑ **ओंकार–गायत्री**
  - उपांशु–मानस
  - |
  - **प्रणव**
  - |
  - **स्वाध्याय**
- ↑ **पूजन–हवन**
  - **विष्णुरुद्रादिपूजन**
  - |
  - **देवयजन**
  - |
  - **ईश्वरप्रणिधान**

|

पातांञ्जल क्रियायोगः

(शरीर निर्वर्तकव्यापार विशेषः)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देवयजन

अग्निर्वैदेवानामवमः । विष्णुः परमः । तदंतरेण सर्वा अन्या देवताः । ॐ नमः शिपिविष्टाय विष्णवे नमः।

एष पंथाः । एतत्कर्म । एतद्ब्रह्म । एतत्सत्यं । तस्मान्न प्रमाद्येत् । तन्नातीयात् । नह्यत्यायन् पूर्वे । येऽत्यायन्स्ते पराबभूवुः ॥

स्वस्तिमंत्राः

ॐस्वस्तिनइन्द्रोवृद्धश्रवाः । स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिः । स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐभद्रंकर्णेभिःश्रृणुयामदेवाः । भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः । व्यशेमदेवहितंयदायुः॥ ॐसहनाववतु । सहनौभुनक्तु । सहवीर्यंकरवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै ॥

ॐवाङ्मेमनसिप्रतिष्ठिता मनोमेवाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्मएधिवेदस्यमआणीस्थः श्रुतंमेमा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान्संदधाम्यृतंवदिष्यामि सत्यंवदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवत्ववतुमामवतु वक्तारमवतुवक्तारम् ॥ ॐआप्यायंतुममांगानिवाक्प्राणश्चक्षुः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रोत्रमथोबलमिंद्रियाणिच सर्वाणि सर्वंब्रह्मौपनिषदं माहं- ब्रह्मनिराकुर्यांमामाब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्व- निराकरणंमेऽस्तु तदात्मनिनिरतेयउपनिषत्सु धर्मास्ते- मयिसंतुतेमयिसन्तु ॥ ॐ पूर्णमदःपूर्णमिदंपूर्णात्पूर्ण- मुदच्यते । पूर्णस्यपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ॐ शांतिः शातिः शांतिः ॥

(स्नान) **पावमानीय–अपां मंत्राः ।**

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसे ॥ योवःशिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥

ॐ ऋतं च सत्यंचाभीद्धात्तपसोध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत । अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्यमिष- तोवशी । सूर्याचंद्रमसौ धातायथापूर्वमकल्पयत । दिवं च पृथिवींचांतरिक्षमथोस्वः ॥

ॐ शंनोदेवीरभीष्टये–आपो भवंतुपीतये–शंयोर- भिस्रवंतुनः ॥ ॐ आपो अस्मान्मातरः शुंधयन्तु ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐहिरण्यवर्णाः शुचयःपावकायासुजातःकश्यपो-यास्विद्रः। अग्नियागर्भंदधिरेविरूपास्तानआपःशँस्योना भवंतु ॥ यासाँराजावरुणोयातिमध्ये सत्यानृतेअवपश्यन्-जनानां। मधुश्च्युतःशुचयोयाःपावकास्तानआपःशँस्योना भवंतु ॥ यासांदेवादिवि कृण्वंतिभक्षंयाअंतरिक्षेबहुधा-भवंति । याः पृथिवींपयसोंदंतिशुक्रास्तानआपःशँस्योना-भवंतु ॥ शिवेनमाचक्षुषापश्यतापः शिवयातनुवोपस्पृशत त्वचंमे । सर्वाँअग्निँरप्सुषदो हुवेवोमयिवर्चोबलमोजो-निधत्त ॥

आपमापामपःसर्वाः । अस्मादस्मादितोऽमुतः । अग्नि-र्वायुश्चसूर्यश्च । देवीर्भुवनसूवरीः। महानाम्नीर्महामानाः। शिवा नः शंतमा भवंतु ॥

आयतन अनुवाक ।

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान पशुमान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनंवेद । आय-तनवान् भवति ॥ अग्निर्वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽग्नेरायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो-वा अग्नेरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।। वायुर्वाअपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो वायोरायतनं वेद । आयतवान् भवति । आपो वै वायोरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।। असौ वै तपन्नपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वा अमुष्य तपत आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।। चन्द्रमा वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै चन्द्रमस आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।। नक्षत्राणि वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै नक्षत्राणामायतम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनम् वेद । आयतनवान् भवति ।। पर्जन्यो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यः पर्जन्यस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै पर्जन्यस्याऽयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।। संवत्सरो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यः संवत्सर-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्याऽऽयतनम् वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै संवत्सरस्याऽऽयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽप्सुनावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येव तिष्ठति । इमे वै लोका अप्सु प्रतिष्ठिताः । तदेषाभ्यनूक्ता । अपां रसमुदयँसन् । सूर्येशुक्रँ समाभृतं । अपां रसस्ययोरसः । तंवो गृण्हाम्युत्तममिति । इमे वै लोका अपां रसः ॥ तेऽमुष्मिन्नादित्ये समाभृताः ॥

(भस्म धारण) **रुद्रोपासना**

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः। भवे भवे नातिभवे भवस्वमां भवोद्भवाय नमः ।। वाम-देवाय नमो, ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर-तरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नोरुद्रः प्रचो-दयात् ।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधि-पतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम् ।।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ ऋतं सत्यं परंब्रह्म पुरुषं कृष्णपिंगलम् । ऊर्ध्वं-रेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमोनमः । सर्वो वै रुद्र-स्तस्मैरुद्राय नमो अस्तु । पुरुषो वै रुद्रस्तन्महो नमो नमः । विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानंच यत् । सर्वोह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । कद्रुद्राय प्रचेतसे, मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शंतमं हृदे । सर्वोह्येष रुद्र-स्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥ ॐनमो रुद्राय विष्णवे नमः ॥

(सर्वप्रसवहेतुभूत सवितृ स्वरूपिणे परमात्मने नमः ।)

(संध्या) **सवितृ उपासना ।**

(त्रिप्राणायामान्–त्रिःप्रणवं च कृत्वा)

ध्येयः सदा सवितृ मंडलमध्यवर्ती, नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः । केयूरवान् मकरकुंडलवान् किरीटी, हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥-ॐभूर्भुवःस्वः ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं – भर्गोदेवस्यधीमहि – धियो यो नः प्रचोदयात् । – ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं । ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोऽम् । असावादित्यो ब्रह्म ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तच्छंयोरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवी स्वस्तिरस्तुनः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वंजिगातु भेषजं । शंनो अस्तुद्विपदे । शंचतुष्पदे । ॐ नमो, ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः । नमो, वाचे नमो व्राचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि । भद्रं नो अपिवातय मनः ।।

महापुरुषविद्या ।

ॐ जितं ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन । नमस्तेऽस्तु हृषीकेश, महापुरुष पूर्वज ॥ नमो हिरण्यगर्भाय, प्रधानाव्यक्तरूपिणे । ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥ देवानां दानवानां च, सामान्यमधिदैवतं । सर्वदा चरणद्वन्द्वं, व्रजामि शरणं तव ॥ एकस्त्वमसि लोकस्य, स्रष्टा संहारकस्तथा । अध्यक्षश्चानुमन्ता च, गुणमायासमावृतः ।। संसारसागरं घोर मनन्तं क्लेशभाजनम् । त्वामेव शरणं प्राप्य, निस्तरन्ति मनीषिणः ।। न ते रूपं न चाकारो, नायुधानि न चास्पदम् । तथापि पुरुषाकारो, भक्तानां त्वं प्रकाशसे ॥ नैव किंचित्परोक्षं ते प्रत्यक्षोऽसि न कस्यचित् । नैव किंचिदसिद्धं ते न च सिद्धोऽसि कस्यचित् ॥ कार्याणां

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कारणं पूर्वं, वचसां वाच्यमुत्तमम् । योगिनां परमा सिद्धिः परमं ते पदं विदुः ।। अहं भीतोऽस्मि देवेश, संसारेऽस्मिन् भयावहे । त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष, न जाने शरणं परम् ।। कालेष्वपि च सर्वेषु, दिक्षु सर्वासु चाच्युत। शरीरे च गतप्राणे, वर्धते मे महद् भयम् ।। त्वत्पाद-कमलादन्यत्, न मे जंन्मान्तरेष्वपि । निमित्तं कुशल-स्यास्ति, येन गच्छामि सद्‌गतिम् ।। विज्ञानं यदिदं प्राप्तं, यदिदं ज्ञानमर्जितं । जन्मान्तऽरेपि मे देव, मा भूदस्य परिक्षयः ।। दुर्गतावपि जातायां, त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम । यदि नाथं च विन्देयं, तावताऽस्मि कृती सदा ।। अकाम-कलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितं । कामये विष्णु-पादौ तु, सर्वजन्मसु केवलम् ।। पुरुषस्य हरेः सूक्तं, स्वर्ग्यं धन्यं यशस्करम् । आत्मज्ञानमिदं पुण्यं, योग-ज्ञानमिदं परम् ।। इत्येवमनया स्तुत्या, स्तुत्वा देवं दिने दिने । किंकरोऽस्मीति चात्मानं, देवायैव निवेदयेत् ।।

कृष्णाष्टक ।

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो । धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुर हंताब्जनयनः ।। गदी शंखी चक्रीविमलवनमाली स्थिररुचिः । शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ।।१।। यतः सर्वंजातं वियदनिल

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुख्यं जगदिदम् । स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा ।। लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु सविभुः ।। शरण्यो० ।।२।। असूनायम्यादौ यमनियम मुख्यैः सुकरणैर् । निरुध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम् । यमीडयं पश्यंति प्रवरमतयो मायिनमसौ ।। शरण्यो० ।। ३।। पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा । यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम् । नियंतारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ ।। शरण्यो० ।।४।। महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान्यस्य बलतो । न कस्य स्वातंत्र्यं क्वचिदपिकृतौ यत्कृतिमृते । कवित्वादेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः ।। शरण्यो० ।।५।। विना यस्यध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां । विना यस्यज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता । विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः ।। शरण्यो० ।।६।। नरातंकोऽत्तंकःशरण शरणो भ्रांतिहरणो । घनश्यामो वामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः । स्वयंभूर्भुतानां जनक उचिताचार सुखदः ।। शरण्यो० ।।७।। यदाधर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरिणी । तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः । सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपतिः शरण्यो० ।।८।।

इति हरिरखिलात्माराधितः शंकरेण । श्रुतिविशदगुणोऽसौ मातृमोक्षार्थमाद्यः । यतिवरनिकटे श्रीयुक्त

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आविर्बभूव । सदयधवलहासः शंखचक्राब्जहस्तः ॥

अविनयमपनय विष्णो, दमय मनः शमय विषय-मृगतृष्णाम्। भूतदयां विस्तारय, तारय संसारसागरतः॥ दिव्यधुनीमकरंदे, परिमलपरिभोगसच्चिदानंदे । श्रीपति-पदारविंदे, भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥ सत्यपिभेदापगमे, नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् । सामुद्रो हि तरंगः, क्वचन समुद्रो न तारंगः ॥ उद्धृतनग नगभिदनुज, दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे । दृष्टे भवति, प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥ मत्स्यादिभिरवतारै, रवतारवतावता सदा वसुधाम् । परमेश्वर परिपाल्यो, भवता भवतापभीतोऽहम् ॥ दामोदर गुणमंदिर, सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द । भवजलधिमथनमंदर, परमं दरमपनय त्वं मे ॥ नारायण करुणालय, शरणं करवाणि तावकौ चरणौ । इति षट्पदी मदीये, वदनसरोजे सदा वसतु ॥

श्री शंकराचार्य स्तवन

जय भगवन् जय शंकर विद्याकल्पतरो । निर्मथितश्रुतिसागर जयजय भुवनगुरो ॥ ध्रु॥ धर्मस्थापन हेतोर्लीलातनुधारिन् लोकानुग्रहबुद्धया ब्रह्मणि संन्यासिन् । कल्युद्भवनानाविधपाखंडध्वंसिन् अद्वैतामृत-दृष्ट्या जडजीवोद्धारिन् ॥ १ ॥ श्रुतिशिरसस्तत्त्वाना-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेकस्त्वं वेत्ता । परपक्षाणां पविरिव विदितस्त्वं भेत्ता । संशीतेर्युक्तिबलादेकस्त्वं छेत्ता । त्वद्वाक्यामृतपुष्टः को नु जनः खेत्ता ॥२॥ तन्वा वाचा मनसानुचरामः पापं । तत्फलमश्नीमहि तत् त्रिविधं परितापम् । नोचेदादिशसि त्वं सन्मार्गं सकृपं । ब्रह्मपदं मर्त्यानां सत्यं दुरवापम् ॥३॥ त्वच्चरितानुध्यानादाचारे शुद्धि । त्वद्भाष्यश्रवणादप्य-नघामिहबुद्धि । विन्देम त्वच्चरणस्मरणात् पुण्यर्धिम् । देहि गुरो करुणाघन निःश्रेयससिद्धिम् ॥४॥ शारदयापि नुतं त्वां स्तोतुमलं कोऽहं । आदिशमामसमंजसमक्षर-सन्दोहम् । स्पर्शमणे स्वर्णीकुरुमां मलिनं लोहं । स्थित्वा मे हृद्यनिशं वारय मम मोहम् ॥५॥

● अज्ञानांतर् गहनपतितान् आत्मविद्योपदेशैः । त्रातुं लोकान् भवदवशिखा तापपापच्यमानान् । मुक्त्वा मौनं वटविटपिनो मूलतो निष्पतंती । शंभोर्मूर्तिश्चरति भुवने शकराचार्यरूपा ॥

● अखंडं मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णम् । सकलमुनिजनानां ज्ञानदातार-मारात् ॥ त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवम् । जनन-मरणदुःखच्छेददक्षं नमामि । चित्रं वटतरोर्मूले, वृद्धाः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शिष्या गुरुर्युवा । गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं, शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः । ॐ नमः प्रणवार्थाय, शुद्धज्ञानैकमूर्तये । निर्मलाय प्रशांताय दक्षिणामूर्तये नमः । निधये सर्व-विद्यानां, भिषजे सर्वरोगिणाम् । गुरवे सर्वलोकानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥ मौनव्याख्याप्रकटितपरब्रह्मतत्त्वं युवानम् । वर्षिष्ठांते वसदृषिगणैरावृतं ब्रह्मनिष्ठैः ॥ आचार्येंद्रं करकलितचिन्मुद्रमानंदरूपम् । स्वात्मारामं मुदितवदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ स्वामिन् नमस्ते नतलोक-बन्धो, कारुण्यसिंधो पतितं भवाब्धौ । मामुद्धरात्मीय-कटाक्षदृष्टया, ऋज्वातिकारुण्यसुधाभिवृष्ट्या ॥

\+ \+ \+ \+

जयजय सद्गुरुराज निरंजन, श्रीमन्माधव जयभगवन् ।
सहस्रदलकंजाधिनिवासिन्, परमहंस जय परमात्मन् । ध्रु।
हृदयपंकजे ज्योतिष्मन्तं, नन्दनन्दनं घननीलम् ।
अंतर्गतया दृशा पश्यतो, नंन्दयंतु मां तव पुलकाः ॥
श्यामसुन्दरे संयतस्यते, निर्विकल्पतां प्रतियाते ।
चेतसि भगवन् भवतु विलीनं, ममापि सकलं वृत्तिशतम् ॥
चिद्गगनस्थितदिव्यसुधाकर, सुधारसार्द्रास्तव सततम् ।
समाधिविमलाः कृपाकटाक्षाः पावयंतु मां दुष्कृतिनम् ॥
निस्त्रैगुण्ये पथि विचरन्नपि, लोकसंग्रहं संपश्यन् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जडवल्लोके स्थितोसि भगवन्, रूढाचारेऽखिन्नमनाः ॥
चिंतितममलं भाषितममलं, विलसितममलं तव सकलम् ।
विमलयतां मे जीवनमखिलं, विलीनस्य खलु तव पदयोः॥

श्रीशारदा स्तवन ।

जयज्ञप्ति, निजशांति विश्रांति, सोऽहं बीजनिवासिनी ।ध्रु।
जय अनादि, अव्यक्त अगोचर, जय जय जय अवधूतिनी ।
जयचित्‌शक्ति सच्चिद्रूपे, ब्रह्मानन्दविकासिनी ॥
जय जय जय, अमूर्तमूर्ते, जय भवबन्धविच्छेदिनी ।
जय सद्‌बुद्धि, विशुद्ध सत्वे, जय परमामृत रूपिणी ॥
जय स्वयंभुवे, स्वसंवेद्ये, जय जय निजसंजीविनी ।
जय जय वृत्ति, ज्ञान निकृंतिनी ज्ञेयसुखामृत वर्षिणी ॥
शिवानन्द गुरु, नाथ प्रसादे, मोक्षानंद प्रदायिनी ।
ब्रह्मदत्त तुव, जय तुव जय तुव, भ्रमरगुफासुखशायिनी ॥

\+ \+ \+ \+

आरती जगदंबे, तुज अंबे, तारक विश्वकुटुंबे ।
आरती जगदंबे ।
प्रथम मूळारंभा, घटशोभा, तोरण मखर स्तंभा । ,,
दुसरी ही पूजा, तुज वोजा, ओंवाळीन सुखकाजा । ,,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तिसरी त्रिगुणाची, आकाशी, उभवी गुढी वर साची । „
चवथी मग पूजा, तुज वोजा, चवथी तव तनुकाजा । „
पंचारती पाही, मज आई, रक्षत सकळा ठायी । „
षड्गुण संपन्न, तव अन्न, देशी मंगल सदन । „
सप्तस्वर मेळी, रसभारी, नानावाद्यरसाळी । „
आठही तवभावा, मनभावा, आठवी मग सुखकाजा „
नवदिन नवरात्र, शिवस्तोत्र, स्थापित मंगल मंत्र । „
दास तुझा ध्यायी, तुज आई, सुंदर अंबाबाई । „

ॐस्तवन ।

भृकुटि महल चढ, देख पियारे, जागे ज्योति अपारा ॐ
सोऽहं सोऽहं, जपते जपते, पहुंचो दशमे द्वारा ॐ
मेरुदंडमें, बंकनाल है, उलटी गंग कहावे ॐ
उसी गंगमें सुनलो प्यारे, जो कोइ घुसकर न्हावे ॐ
प्रणवयानसे ऊँचा चढकर, सुखमनिगढमें जावे ॐ
तनका भान, भुलाके वहांसे, सोऽहं सोऽहं गावे ॐ
वहांसे ऊँचा, बेहद ऊँचा, ब्रह्मशिखरपै जावे ॐ
ॐ ध्वनीसे, चढते चढते, निश्चिल घुमरी आवे ॐ
अपने आप, आप अपनेमें, निर्विकल्प निरवाणी ॐ
शिवानन्दगुरु, केवल चेतन, निजानन्द आनंदी ॐ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गीता अध्याय १५

श्रीभगवानुवाच । ऊर्ध्वमूलमधः शाख, मश्वत्थं-
प्राहुरव्ययम् । छंदांसियस्यपर्णानि, यस्तंवेदसवेदवित्
॥१॥ अधश्चोर्ध्वप्रसृतास्तस्यशाखा, गुणप्रवृद्धाविषय-
प्रवालाः । अधश्चमूलान्यनुसंततानि, कर्मानुबंधीनिमनुष्य
लोके ॥२॥ नरूपमस्येह तथोपलभ्यते, नांतोनचादिर्नच-
संप्रतिष्ठा । अश्वत्थमेनंसुविरूढमूल, मसंगशस्त्रेणदृढेन-
छित्वा ॥३॥ ततःपदंतत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गताननिवर्तं-
तिभूयः । "तमेवंचाद्यंपुरुषंप्रपद्ये", यतः प्रवृत्तिः प्रसृता-
पुराणी ॥४॥ निर्मानमोहाजितसंगदोषा, अध्यात्मनि-
त्याविनिवृत्तकामाः । द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्, गच्छं-
त्यमूढाः पदमव्ययतत् ॥५॥ नतद्भासयतेसूर्यो, न शशांको
न पावकः । यद्गत्वाननिवर्तंते, तद्धामपरमं मम ॥६॥
ममैवांशोजीवलोके, जीवभूतः सनातनः । मनःषष्ठानी-
न्द्रियाणि, प्रकृतिस्थानिकर्षति ॥७॥ शरीरं यदवाप्नोति,
यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः । गृहीत्वैतानिसंयाति, वायुर्गंधानि-
वाशयात् ॥८॥ श्रोत्रंचक्षुः स्पर्शनंच रसनंघ्राणमेवच ।
अधिष्ठाय मनश्चायं, विषयानुपसेवते ॥९॥ उत्क्रा
मंतंस्थितंवापि, भुंजानंवागुणान्वितम् । विमूढानानु-
पश्यंति, पश्यंतिज्ञानचक्षुषः ॥१०॥ यतंतोयोगिनश्चैनं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् । यतंतोऽप्यकृतात्मानो, नैनं-
पश्यंत्यचेतसः ॥११॥ यदादित्यंगतंतेजो, जगद्भासयतेऽ-
खिलम् । यच्चंद्रमसियच्चाग्नौ, तत्तेजोविद्धिमामकम्
॥ १२ ॥ गामाविश्यच भूतानि, धारयाम्यहमौजसा ।
पुष्णामिचौषधीःसर्वाः, सोमोभूत्वारसात्मकः ॥ १३ ॥
अहंवैश्वानरोभूत्वा, प्राणिनांदेहमाश्रितः । प्राणापान-
समायुक्तः, पचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥ १४ ॥ सर्वस्यचाहं-
हृदिसन्निविष्टो, मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच वेदैश्चसर्वै-
रहमेववेद्यो, वेदांतकृद्वेदविदेवचाहम् ॥१५॥ द्वाविमौ-
पुरुषौलोके, क्षरश्चाक्षरएवच । क्षरःसर्वाणिभूतानि
कूटस्थोऽक्षरउच्यते १६॥उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः, परमात्मे-
त्युदाहृतः। योलोकत्रयमाविश्य, बिभर्त्यव्ययईश्वरः ।१७।
यस्मात्क्षरमतीतोऽह, मक्षरादपिचोत्तमः। अतोऽस्मिलोके
वेदेच, प्रथितःपुरुषोत्तमः ॥१८॥ यो मामेवमसंमूढो,
जानातिपुरुषोत्तमम् । ससर्वविद्भजतिमां, सर्वभावेन
भारत ॥१९॥ इतिगुह्यतमंशास्त्र, मिदमुक्तंमयानघ ।
एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान् स्यात्, कृतकृत्यश्चभारत ॥ २०॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पूजा प्रयोग ।

वामतः तैलदीपं प्रज्वाल्य—शंखं निनाद्य, द्विराचम्य—प्राणायामं कृत्वा, प्रणवं चोच्चार्य—यतवाक् भवेत् ।

ॐ पांत्वस्मान् पुरुहूतवैरिबलवन्मातंगमाद्यत्-घटा। कुम्भोच्चाद्रिविपाटनाधिकपटुप्रत्येकवज्रायिताः ।। श्रीमत्कंठीरवास्यप्रततसुनखरादारितारातिदूर। प्रध्वस्त-ध्वांतशांत प्रविततमनसा भाविता नाकिवृंदैः ।। लक्ष्मी-कांत समंततोपिकलयन् नैवेशितुस्तेसमम् । पश्याम्युत्तम-वस्तु दूरतरतोऽपास्तंरसोयोऽष्टमः । यद्रोषोत्करदक्ष-नेत्रकुटिलप्रांतोत्थिताग्निस्फुरत् । खद्योतोपमविस्फुलिंग-भसिता ब्रह्मेशशक्रोत्कराः ।।

ॐ मंगलं भगवान् विष्णूर् मंगलं गरुडध्वजः। मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः।। नारायण परं ब्रह्म नारायण परं तपः। नारायण परं चेदं सर्वं नारायणात्मकम् ।।

ॐ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं, यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै । तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं, मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोऽम् । असावादित्यो ब्रह्म ॥ (पुष्पांजलिं समर्प्य–निर्माल्यं विसृज्यं अर्घ्याद्युपचाराः–) ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः-प्रचोदयात् ।

(अभिषेक) **पुरुषसूक्त ।**

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । सभूमिं विश्वतोवृत्वा अत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ पुरुषएवेदंसर्वं यद्भूतं यच्चभव्यं । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ एतावानस्यमहिमाऽतो ज्यायांश्च पूरुषः । पादोस्यविश्वा-भूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि ॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः । ततो विश्वङ्व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥ तस्माद्विराळजायत विराजो अधिपूरुषः । सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत । वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः ॥ तंयज्ञंबर्हिषि प्रौक्षन् पुरुष जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यं । पशूंस्तांश्चक्रेवायव्या नारण्यान् ग्राम्याश्चये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानिजज्ञिरे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

छंदांसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।। तस्मादश्वाअजायंत येकेचोभयादतः । गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।। यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् । मुखंकिमस्यकौबाहू काऊरूपादाउच्येते ।। ब्राह्मणोस्यमुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोअजायत ।। चन्द्रमामनसोजातश् चक्षोः सूर्योअजायत । मुखाद्रिंद्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायतं ।। नाभ्याआसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौःसमवर्तत । पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकांअकल्पयन् ।। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवायद्यज्ञंतन्वाना अबघ्नन् पुरुषंपशुम् ।। यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाकंमहिमानः सचंत यत्रपूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ।।

ॐ नारायण विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुःप्रचोदयात् ।

(दैवीसंपत् हेतुभूत श्रीस्वरूपिणे परमात्मने नमः ।)

श्री सूक्त ।

तां विद्यां ब्रह्मयोनीं सरुपां । वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां । तामग्निवर्णांतपसा ज्वलंतीं । दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये । ॐ गौरीर्मिमायसलिला नितक्षत्येकपदी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमेव्योमन्। ॐ प्रणोदेवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामवित्र्यवतु। भारती पवमानस्यसरस्वतीळामही। इमंनो यज्ञमागमन् तिस्रोदेवीःसुपेशसः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्। कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयंतीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे। आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पति स्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिददातु मे। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिंच सर्वान्निर्णुद मे गृहात्। गंध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । मनसः काममाकूतिं वाचःसत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीःश्रयतां यशः । कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभवकर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ आपःस्रजंतु स्निग्धा निचिक्लीत वस मे गृहे । निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले । आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह । आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह । तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो-दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

ॐ प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती—धीनाम वित्र्यवतु ।

(यःशुचिःप्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहं सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥)

● (शंखोदक) ॐ अतोदेवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्वि-चक्रमे । पृथिव्याः सप्तधामभिः ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदं । समुळ्हमस्य पांसुरे । त्रीणिपदावि-चक्रमे विष्णुर्गोपाअदाभ्यः । अतोधर्माणि धारयन् । विष्णोःकर्माणि पश्यत यतोव्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

युज्यः सखा । तद्विष्णोः परमं पदं सदापश्यन्तिसूरयः। दिवीवचक्षुराततम् । तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसः समिंधते । विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेणाभिर्षिचामि॥

ॐ (स्थापन) तदस्तु मित्रा वरुणा तदग्ने शंयोरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तम् । अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमोदिवेबृहते सादनाय ॥० तत्वायामि ब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेहबोध्युरुशंसमान आयुः प्रमोषीः ॥ इमं मे वरुणश्रुधि हवमद्याचमृळय । त्वामवस्युराचके ॥० नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशीनेभ्य । यजाम देवान् यदि शक्नवाम माज्यायसः शंसमावृक्षि देवाः ॥०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय विष्णवे नमः ।

अभिश्रवणं

(गंधपुष्पादि) सहस्त्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंभुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् । विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणं हरिम् । विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्व-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुपजीवति । पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं शाश्वतं शिवमच्युतम् । नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् । नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः । नारायणपरं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः । नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः । यच्च किंचिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा । अंतर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥ अनंतमव्ययं कविं समुद्रेंऽन्तं विश्वशंभुवम् । पद्मकोशप्रतीकाशं हृदयं चाप्यधोमुखम् । अधोनिष्ठ्या वित स्त्यांते नाभ्यामुपरी तिष्ठति । ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत् । सन्ततं शिलाभिस्तु लम्बत्याकोशसंनिभम् । तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् । तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः । सोग्रभुग्विभजन्तिष्ठन्नाहारमजरः कविः । तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य संतताः । संतापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः । तस्य मध्ये वन्हिशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता ॥ नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा । नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा । तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः । स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोक्षरः परमः स्वराट् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घृतदीप—नैवेद्य ।

ॐ श्रिये जातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो ददाति । श्रियं वसाना अमृतत्व मायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ ।। श्रिय एवैनं तच्छ्रियामादधाति सन्ततमृचा वषट् कृत्यं संन्तत्यै सन्धीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद । ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा स्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाकंमहिमानः सचंत यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ।।

ॐ नारायणाय विद्महे—वासुदेवाय धीमहि—तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।

दशावतार स्तुति ।

प्रलयपयोधिजले, धृतवानसि वेदम् । विहितवहित्रचरित्रमखेदम् । केशवधृत मीनशरीर, जय जगदीशहरे ।।ध्रु।। क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे । धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे । केशवधृत कच्छपरूप, जय जगदीश हरे ।।२।। वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना । शशिनि कलंककलेव निमग्ना । केशवधृत शूकररूप, जय जगदीश हरे ।।३।। तवकरकमलवरे नखमद्भुतशृंगम् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम्। केशवधृत नरहरिरूप, जय जगदीश हरे ॥४॥ छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत-वामन । पदनखनीरजनितजनपावन । केशवधृत वामन-रूप, जय जगदीश हरे ॥५॥ क्षत्रियरुधिरमये जगद-पगतपापम्। स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्। केशवधृत भृगुपतिरूप, जय जगदीश हरे ॥६॥ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् । दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् । केशवधृत रामशरीर, जय जगदीश हरे ॥७॥ वहसि-वपुषिविशदे वसनं जलदाभम् । हलहति भीतिमिलित यमुनाभम्। केशवधृत हलधररूप, जय जगदीश हरे॥८॥ निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्। सदयहृदय दर्शितपशु-घातम् । केशवधृत बुद्धशरीर, जय जगदीश हरे ॥९॥ म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम् । केशवधृत कल्किशरीर, जय जगदीश हरे ॥१०॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्। श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारम् । केशवधृत दशविधरूप, जय जगदीश हरे ॥११॥

● वेदानुद्धरते, जगन्निवहते, भूभारमुद्बिभ्रते । दैत्यान् दारयते, बलिं छलयते, क्षत्रक्षयं कुर्वते । पौलस्त्यं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जयते, हलिं हलयते, कारुण्यमातन्वते । म्लेच्छान् मूर्च्छयते, दशाकृतिकृते, कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

● (मंत्रपुष्पांजलि) ॐ नमो महद्भ्यो नमो अभर्केभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः । यजाम देवान् यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शं समावृक्षि देवाः ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ गौरीर्मिमाय सलिला नितक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ॥ ॐ प्रणोदेवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ दिगंबराय विद्महे अवधूताय धीमहि । तन्नो दत्तः प्रचोदयात् ॥ तद्विष्णोःपरमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततं । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिंधते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥

● योन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां । संजीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना ॥ अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन् । प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ॥ ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं । तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शरण्यम् । भक्तार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतम् । वन्दे महापुरुष ते चरणारविंदम् ।। त्यक्त्वासुदुस्त्यजसुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीम् । धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ।। मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत् । वन्दे महापुरुष ते चरणारविंदम् ।। नास्था धर्मे न वसु निचये नैव कामोप-भोगे । यद् भाव्यं तद् भवतु भगवन् पूर्वकर्मानुरूपम् । एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मान्तरेऽपि । त्वत्पादांभो-रुहयुगगता निश्चला भक्तिरस्तु ।। नारायणाऽखिलगुरो भगवन् नमस्ते । नारायणाऽखिलगुरो भगवन् नमस्ते ।।

● आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम् । पूजा तेविषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो । यद्य-त्कर्म करोमितत्तदखिलं शंभोतवारधनम् । करचरणकृतंवा-क्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसंवाऽपराद्धम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व, जयजय करुणाब्धे श्रीमहादेवशंभो ।। तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर । यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।

● यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपःपूजाक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।। मन्त्रहीनं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन । यत्कृतन्तु मयादेव परि-
पूर्णं तदस्तु मे। अनेनकृत पूजाकर्मणा सर्वांतर्यामी भगवान्
परमेश्वरः प्रीयतां प्रीतो भवतु। ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पण-
मस्तु। वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपि-
विष्ट हव्यंम् । वर्धंतुत्वा सुष्टुतयो गिरो म यूयं पात
स्वस्तिभिः सदानः ।।

विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः ।।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होमप्रयोग ।

(होमकालीन प्रातःस्तवन)

इन्द्रा, येंदो परिस्त्रवा ।।ध्रु ।

यत्रानंदाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्रमाममृतं कृधि ।।

इंद्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
इंद्रो राजा जगतश्चर्षणीनामिद्रोराजा जगतो य ईशे ।।

यज्ञायज्ञा वो अग्नये, गिरागिराच दक्षसे
प्र प्रवयमृतंजातवेदसं प्रियंमित्रं न शंसिषं ।
ऊर्जो नपातं सहिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये
भुवद्वाजेष्वविता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम् ।।

उपास्मै गायताः नरः पवमानायेंदवे, अभिदेवां इयक्षते ।
अभिते मधुना पयोथर्वाणो अशिश्रयुः, देवं देवाय देवयु ।
सनः पवस्वशंगवे शं जनाय शमर्वंते, शं राजन्नोषधीभ्यः ।।

मधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः,माध्वीर्नःसंत्वौषधीः ।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवंरजः, मधुद्यौरस्तुनःपिता ।
मधुमाँ नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यःमाध्वीर्गावोभवंतु नः।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भारती पवमानस्य सरस्वतीळामही,
इमंनोयज्ञमागमन् तिस्रो देवीःसुपेशसः ॥

श्रियेजातः श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधा
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवंति सत्या समिथा मितद्रौ
आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यं, भवा वाजस्यसंगथे।

यत्र तत्परमं पदं विष्णो र्लोके महीयते
देवैः सुकृतकर्मभि स्तत्रमाममृतं कृधि ॥

●चरणं पवित्रं विततं पुराणं-येन पूतस्तरतिदुष्कृतानि
तेन पवित्रेण शुद्धेन पूता—अतिपाप्मानमरातिं तरेम।
लोकस्यद्वार मर्चिमत्पवित्रं-ज्योतिष्मत् भ्राजमानं महस्व
अमृतस्यधारा बहुधा दोहमानं-चरणं नो लोके सुधित
दधातु । नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरो
बाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटियु
धारिणे नमः ॥

(अग्निशय्या तथा स्थापन)

● ॐ भूरग्निं च पृथिवींच मांच, त्रीँश्चलोका
संवत्सरंच, प्रजापतिस्त्वा सादयतु। तया देवतयांगिरस्व
ध्रुवासीद ।· ॐ भुवोवायुंचांतरिक्षं च मांच, त्रीँ
लोकान् संवत्सरंच, प्रजापत्तिस्त्वासादयतु। तया देवतय

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गिरस्वत् ध्रुवासीद ।। ॐ स्वरादित्यं च दिवं च मांच, त्रीँश्चलोकान् संवत्सरंच, प्रजापतिस्त्वा सादयतु । तया देवतयांगिरस्वत् ध्रुवासीद ।। ॐ भूर्भुवः सुवश्चंद्रमसंच दिशश्चमांच, त्रीँश्चलोकान् संवत्सरंच, प्रजापतिस्त्वा-सादयतु । तया देवतयांगिरस्वत् ध्रुवासीद ।।

● तदेतत्परियद्देवचक्रं। आर्द्रं पिन्वमानं। स्वर्गेलोक-एति । विजहद्विश्वाभूतानि संपश्यत् । आर्द्रो ह पिन्व-मानः । स्वर्गे लोकएति । विजहन् विश्वाभूतानि संप-श्य [। एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य । नकर्मणा वर्धते नो कनीयान् । श्रद्धयादेवो देवत्वमश्नुते । श्रद्धाप्रतिष्ठा लोकस्यदेवी । सानोजुषाणोपयज्ञमागात् । कामवत्सामृतं दुहाना ।।

● प्रवोवाजाअभिद्यवो हविष्मंतो घृताच्या, देवांजि-गाति सुम्नयोऽम् । अग्नआयाहिवीतये गृणानो हव्यदातये, निहोतासत्सि बर्हिषि ।। अग्निदूतंवृणीमहे होतारंविश्व-वेदसं, अस्य यज्ञस्यसुक्रतोऽम् ।। वायो आयाहि । वायवा-याहि दर्शतेमें सोमा अरंकृताः । इन्द्राऽऽयाहि । इन्द्राऽऽ-याहि चित्रभानव, इन्द्राऽऽयाहि धियेषित, इन्द्राऽऽयाहि वृत्रहन् ।। पावका नः सरस्वती, यज्ञं वष्टु धियावसुः ।। शंनोदेवी ....

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(परिसमूहनं-परिस्तरणं-पर्युक्षणम्-पात्रासादन-अग्निपूजनम् ।)

● ॐ अग्निर्मे वाचि श्रितः । वाग् हृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। ॐ वायुर्मे प्राणेश्रितः । प्राणो हृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। ॐ सूर्योमे चक्षुषिश्रितः । चक्षुहृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। ॐ चन्द्रमा मे मनसिश्रितः । मनो हृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। ॐ दिशो मे श्रोत्रे श्रिताः । श्रोतं हृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। ॐ आत्मा म आत्मनिश्रितः । आत्मा हृदये । हृदयं मयि । अहममृते । अमृतं ब्रह्मणि ।। अंतस्तिष्ठतु अमृतस्य गोपाः ।।

● अग्निर्वैदेवानामवमः । विष्णुः परमः । तदंतरेणसर्वा अन्या देवताः ।। ॐ नमः शिपिविष्टाय विष्णवे नमः ।।

● ॐचत्वारिश्रृंगात्रयोअस्यपादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोअस्य ।। त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्याँ आविवेश ।।१।।

नित्यहोम ।

● ॐ भूर्भुवः । स्वः । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं-भर्गोदेवस्य-धीमहि-धीयोयो नः प्रचोदयात् ।। ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योति

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सूर्यः । सूर्याय ज्योतिषे स्वाहा ।। (दश गायत्रीं जपेत्) ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं । ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोऽम् । असावादित्यो ब्रह्म ।। तच्छंयोरावृणीमहे :...... Page 7

अधिकम्–

(समिध्होम)

● अयन्त इध्म आत्माजातवेदस्तेनेध्यस्ववर्धस्वचेद्धवर्धयचास्मान्प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । जातवेदस अग्नय इदं न मय ।।

(आघार होम)

● प्रजापतयेस्वाहा । प्रजापतय इदं न मम || प्रजापतयेस्वाहा | प्रजापतय इदं न मम || अग्नये स्वाहा । अग्नय इदं न मम || सोमाय स्वाहा । सोमाय इदं न मम ।।

प्रधान होम ।

(चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च, द्वाभ्यांपंचभिरेवच । हूयतेच पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः । 'आश्रावय', 'अस्तु श्रौषट्', 'यज', 'ये यजामहे'; 'वौषट्', एवं क्रमेण प्रैषपंचकं यथावकाशं यथेच्छं, न वा योजयेत् ।।)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देवता ······	निमंत्रणऋचा ······	याज्या ······
१. गणेश ······	नमस्तेगणपये ······	एकदंतायविद्महे. ··
२. रुद्र ······	नमस्ते रुद्र ······	त्र्यंबकंयजामहे ··
३. सविता ······	उदुत्यंजात ······	तत्सवितुर्वरेण्यं ·
४. श्रीः ······	हिरण्यवर्णा ······	प्रणोदेवी ···
५. विष्णु ·····	सहस्रशीर्षा ······	नारायणाय विद्महे ···

होमांत प्रार्थना ।

● वेदाहमेतं पुरुषं महांत, मादित्यवर्णतमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति, नान्यः पंथाविद्यतेऽयनाय । यस्मात्परं नापरमस्तिकिंचन, यस्मान्नाणीयो न ज्यायोस्ति कश्चन । वृक्षइवस्तब्धो दिवितिष्ठत्येकः, तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम् ॥ अमृतस्य प्राणं यज्ञमेतं, चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्युः । अमृतेन क्लृप्तं, यज्ञमेतं देवानां वसुधानीं विराजम् ॥

स्विष्टकृत् होम ।

यदस्य कर्मणोत्यरीरिचं, यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृत् विद्वान्, सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्धय स्वाहा ॥

चरुभक्षणं–भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवा, न मे जरा न रोग इति ।

● श्रीसूक्तं उपांशु जपेत् ॥ Page 20

सांगता होम ।

ॐ भूः स्वाहा । अग्नय इदं न मम ॥ ॐ भुवःस्वाहा । वायव इदं न मम ॥ ॐ स्वः स्वाहा । सूर्याय इदं न मम ॥ ॐ भूर्भूवः स्वः स्वाहा । प्रजापतय इदं न मम ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं न मम ॥

अग्निउपस्थान ।

(उत्तर समिध् समर्पण)

ॐ अग्नेत्वंनो अंतमउतत्राताशिवोभवावरूथ्यः । वसुरग्निर्वसुश्रवाअच्छानक्षिद्युमत्तमंरयिंदाः । ॐ अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मत् जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम । ये देवयाना उत पितृयाणाः सर्वान्पथो अनृणा आक्षीयेम ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(परिसमूहनं–पर्युक्षणं–उत्तर पूजनं)

● यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमंतरा । ब्रह्म तेन पुनीहिनः ।। यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहिनः । ब्रह्म सवैः पुनीहिनः ।। उभाभ्याँदेवसहितःपवित्रेणसवेनच । मां पुनीहि विश्वतः ।। त्रिभिष्ट्वंदेवसवितर्वर्षिष्ठैःसोमधामभिः । अग्नेदक्षैःपुनीहिनः ।। पुनंतु मां देवजनाः पुनंतु वसवो धिया । विश्वेदेवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहिमा ।।

● ॐ विश्वानिनोदुर्गंहाजातवेदः । ॐ सिंधुंननावादुरितातिपर्षि । ॐ अग्नेअत्रिवन्नमसागृणानः । ॐ अस्माकंबोध्यवितातनूनाम् । ॐ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः । ॐ अमर्त्यंमर्त्योजोहवीमि । ॐ जातवेदोयशोअस्मासुधेहि । ॐ प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम् । यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदउलोकमग्ने कृणवः स्योनं । अश्विनं सुपुत्रिणं वीरवंतंगोमतंरयिं नशतेस्वस्ति ।। (आत्मानं चालंकृत्य)

समारोप ।

ॐ चमेस्वरश्चमेयज्ञोपचतेनमश्च । यत्तेन्यूनंतस्मैत उपयत्तेतिरिक्तंतस्मैतेनमः ।। ॐस्वस्ति, श्रद्धां, मेधां, यशः, प्रज्ञां, विद्यां, बृद्धिं, श्रियं, बलं, आयुष्यं, तेज, आरोग्यं, देहि मे हव्यवाहन । देहि मे हव्यवाहन ॐ नम इति ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अभिवादनम् ।

अमुक प्रवरान्वित, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं, अमुक वेदस्य, अमुक शाखाध्यायी, अमुकशर्माऽहं, भो गुरो त्वामभिवादये। अग्नये नमः ॥

विसर्जनम् ।

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादितिश्रुतिः। चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥

अनेन यथाशक्ति यथाज्ञानं कृत..... यागहोमकर्मणा सर्वांतर्यामी भगवान् श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां प्रीतो भवतु। ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु। ॐ वषट्तेविष्णवासआकृणोमितन्मेजुषस्वशिपिविष्टहव्यं। वर्धन्तुत्वासुष्ठुतयोगिरोमेयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः। विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः॥

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रासंगिक ।

देवयजन--संकल्पादि ।

(पूजन–हवन)

(द्विराचम्य प्राणान् आयम्य यतवाक् भवेत्)

ॐ केशवायनमः – नारायणायनमः – माधवायनमः – गोविंदायनमः (द्विवारं) विष्णवेनमः – ....

● स्वस्ति श्री ... संवत्सरे .... मासे शुक्लपक्षे तिथौ ... नक्षत्रे ... .. वारे, श्रीपरमेश्वरप्रेरणया श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं क्रियमाण श्री...... यागकर्मांगभूत होम पूजनादि सकलं कर्म करिष्ये । अस्मिन् क्रियमाणकर्मणि यत्किमपि न्यूनातिरिक्तं भवेन् तत्सर्वं क्षम्यतां देव वासुदेव नमोस्तुते ॥

● तत्रादौ गणपतिं स्मृत्वा । (यथावकाशं ऋत्विज पूजन, कुंभ स्थापनादि ।)

पूर्णाहुति–वसोर्धारा–बहिष्पवमान (प्रदक्षिणा) ।

● (अपउपस्पृश्य) मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत माजातमग्निं । कविं सम्राजमतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः ॥ नाभिं यज्ञानां सदनं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रयीणां महामाहावमभि सन्नवन्त । वश्वानरं रथ्यमध्व-
राणां यज्ञस्यकेतुं जनयन्त देवाः ॥ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ
उदारदुपांशुना सममृतत्व मानट्। घृतस्य नाम गुह्यंयदस्ति
जिह्वा देवाना ममृतस्य नाभिः । चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य
पादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो
रोरवीति महादेवो मर्त्यां आविषेश । त्रिधाहितं पणिभि-
र्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविंदन् । इंद्र एकं सूर्य एकं
जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः । एता अर्षंति हृद्या-
त्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे । घृतस्यधारा अभिचा-
कशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् । सम्यक् स्रवंति
सरितो न धेना अंतहृदा मनसा पूयमानाः । यत्र सोमः
पवते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत्पवंते । इमं यज्ञं नयत
देवता नो घृतस्यधारा मधुमत्पवंते । धामं ते विश्वं भुवन-
मधिश्रितमंतःसमुद्रेहृद्यं १तरायुषि । अपामनीके समिथेय
आमृतस्तमश्याम मधुमंतं तऊर्मिम् ॥ नारायणाय विद्महे
वासुदेवाय धीमहि–तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

(विष्णवे वैश्वानराय अग्नय इदं न मम।)

● सुवर्णं घर्मं परिवेद वेनं । इन्द्रस्यात्मानं दशधा
चरन्तम् । अंतःसमुद्रे मनसा चरन्तम् । ब्रह्माऽन्वविन्द-
द्दशहोतारमर्णे । अंतःप्रविष्टः शास्ता जनानां । एकः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सन् बहुधा विचारः । शतंशुक्राणि यत्रैकं भवन्ति । सव वेदा यत्रैकं भवन्ति । सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति । स मानसीन आत्मा जनानाम् । अंतःप्रविष्टः शास्ता जनानां । सर्वाः प्रजा यत्रैकं भवन्ति । चतुर्होतारो यत्रैकं भवन्ति । स मानसीनआत्माजनानाम् । ब्रह्मेन्द्रमग्निजगत.प्रतिष्ठाम् ॥

● अंतःप्रविष्टं कर्तारमेतं । देवानां बंधु निहितं गुहासु । इन्द्रंराजानं सवितारमेतं । वायोरा:मानं कवयो निचिक्यु: । अंतश्चंद्रमसि मनसाचरन्तं । सहैव सन्तं न विजानंतिदेवाः । रश्मि रश्मीनां मध्ये तपंतं । ऋतस्य पदेकवयो निपांति । इंद्रो राजा जगतो य ईशे । हिरण्य-ज्योतिः शरीरस्य मध्ये । अजस्र ज्योतिर्नभसा सर्पदेति । स न इन्द्रः कामवरं ददातु ॥

● अतोदेवा अवन्तु .... Page 21

● विदा मधवन् विदा–विदा मघवन् विदा.... गातुमनुशंशिषो दिशः.... शिक्षाशचीनांपते पूर्वीणां पुरुवसो.... आभिष्ट्वमभिष्टिभिः प्रचेतन प्रचेतय..... इन्द्रद्युम्नाय न इषे–एवा हि शक्रः.... प्रभोजनस्य वृत्रहन्.... एवा हि एवा एवा हि अग्ने.... एवा हि एवा एवा हि इन्द्रा.... । एवा हि एवा एवा हि विष्णो.... । आयोमन्याय मन्यवे । उपोमन्याय मन्यवे । उपेहिविश्वधा । विदामघवन् विदोऽम् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(श्रीमद् भागवतांतर्गत यज्ञेश स्तुति–स्कंध ४–७)

● स्वागतं ते प्रसीदेशतुभ्यं नमः, श्रीनिवास श्रिया कांतया त्राहि नः। त्वामृतेऽधीश नांगैर्मखः शोभते, शीर्षहीनः कबंधो यथा पूरुषः ॥ त्वंक्रतुस्त्वंहविस्त्वंहुताशः स्वयम्, त्वंहि मंत्रः समिध् दर्भपात्राणिच। त्वं सदस्यर्त्विजो द्वंपती देवता, अग्निहोत्रं स्वधा सोम आज्यं पशुः। स प्रसीदत्वमस्माकमाकांक्षताम्, दर्शनं ते परिभ्रष्टसत्कर्मणाम्। कीर्त्यमाने नृभिर्नाम्नि यज्ञेश ते, यज्ञविघ्ना क्षयं यांति तस्मै नमः ॥

पिंडपितृयज्ञ।

● चरणं.... उपास्मैगायतानरः.... मधुवाताऋतायते....

● एकः सुपर्णः स समुद्र आविवेश। स इदं विश्वं भुवनं विचष्टे। सुपर्णं विप्राः कवयो वदंति। एकं संतं बहुधा कल्पयंति। तं पाकेन मनसाऽपश्यमंततः। अपश्यंत्वां मनसा चेकितानं। तपसोधि जातं तपसाविभूतं ॥

(त्रीन् पिंडान् दक्षिणाग्रदर्भेषु धृत्वा)

● आयंतु नः पितरः सोम्यासो अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदंतोऽधिब्रुवंतु तेऽवंत्व-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्मान् ।। य चेह पितरो ये च नेह, याँश्चविद्म याँ उच न प्रविद्म । त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः, स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व ।।

(पुरुषसूक्तेन–गंध, पुष्प, धूपदीप, नैवेद्यैः, पूजयेत्)

–तर्पणम्–

● सोमः पितृमान् यमोंगिरस्वान् अग्निष्वात्ताः-कव्यवाहमादयो, वसुरुद्रादित्यस्वरूपा, ये पितरः तान् पितृन् स्तर्पयामि ।

१. भूः पितृन् स्तर्पयामि २. भुवः पितृन् स्तर्पयामि
३. स्वः पितृन् स्तर्पयामि ४. भूर्भुवःस्व पितृन् स्तर्पयामि
(अस्मत् पितृपितामहप्रपितामहान् .... वसुरुद्रादित्यस्वरूपान् · स्वधानमस्तर्पयामि ३)

(विधिपूर्वकमग्नि प्रज्वाल्य)

● सोमः पितृमान् यमोंगिरस्वान् अग्निष्वात्ताः कव्यवाहनादयो ये पितरः ।। १ सोमायपितृमते स्वधा ।। २ यमायांगिरस्वते स्वधा ।। ३ अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा । एकः पुरस्तात् य इदं बभूव, यतो बभूव भुवनस्य गोपाः । यमप्येति भुवनंसांपराये । सनो हविर्घतमिहायुषेऽस्तुदेवः।।

● नमो वः पितर इषे ।। नमो वः पितर ऊर्जे ।। नमो वः पितरः ।। विष्णवे नमः ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विसर्जनम् ।

● परेतपितरःसोम्यासोगभीरेभिःपथिभिःपूर्विणेभिः।।

(श्वासंनिरुद्ध्य पिंडान् चालयेत्)

● ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्निर्ब्रह्मणाहुतम् । ब्रह्मैवतेन- गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।। एको विष्णुर्महद्भूतं पृथक्- भूतान्यनेकशः त्रीन्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्तेविश्व- भुगव्ययः ।। चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्याँ पंचभिरेवच । हूयतेच पुनर्द्वाभ्यां स मे विष्णुः प्रसीदतु ।।

ॐतत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।। विष्णवे नमो, विष्णवे नमो, विष्णवे नमः ।।

आधार वचन ।

- उदगयने शुक्लपक्षे अप्सु वह्नि चयनं कृत्वा यजेत । इति विधिः ।
- न्यासमुद्रादि विधिविशेषोऽवैदिकः ।
- योगिनीपीठ-क्षेत्रपाल-मातृकादिसकलं तांत्रिकम् ।
- मंडपपूजा-ग्रहदेवता-गणेश पूजादि पौराणिकम् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

- पुण्याहवाचन-ऋत्विजपूजन-मधुपर्कादि प्रासंगिकम् ।
- पूर्णाहुति-विभूति-अभिमार्जन-अवभृथादि प्रासंगिकम् ।
- प्रैषादि ऐच्छिकम् : चमकानुवाकः ऐच्छिकः ।
- अतः सर्वमेतत् यथावकाशं कृताकृतं भवति ।
- एकरूपान् भिन्नमूर्तिन् पंचदेवान्नमस्कृतान्
  एकात्मनो भिन्नरूपान् पंचदेवान् नमाम्यहं ।
- पंचानां देवतानां तु हवनं परमं पदं
  तस्मादग्निमुखेनैव यजेत देवतादिकम् ॥
- विद्यांचाविद्यांच यस्तद्वेदोभयं सह
  अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥
- य इदं अविद्वान् अग्निहोत्रं जुहोति यथा अंगारान्
  अपोह्य भस्मनि जुहुयात् तादृक् तत् स्यात् ॥
- अर्पितं विष्णवे कर्म सर्वं तत् सात्विकं भवेत् ।

\+ \+ \+ \+

संक्षिप्त पूजाक्रम ।

● दीपंप्रज्वाल्य – आचम्य – प्राणायामं कृत्वा–प्रणवंचोच्चार्य......

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

● मंगलंभगवान्.... योब्रह्माणं......

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्.....

(प्रथम पुष्पांजलिं समर्पयेत्)

पुरुषसूक्तेन (स्नान–गंध–पुष्प–धूप–दीप–नैवेद्य समर्पयेत्)

● नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि,

तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।

(उत्तर पुष्पांजलिं समर्पयेत्)

● यस्यस्मृत्या......विष्णवे नमः ३

\+ + + +

संक्षिप्त होमप्रयोग ।

अग्नि संस्थाप्य आचम्य–प्राणानायम्य

० अग्निर्वैदेवानामवमः । विष्णुः परमः । तदतंरेण सर्वा अन्या-
देवताः । ॐ नमः शिपिविष्टाय विष्णवे नमः ।।

० चत्वारिश्रृंगात्रयो अस्यपादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासो अस्य ।
त्रिधाबद्धोवृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश ।।
(परिसमूहनं–पर्युक्षणं)

० गायत्री–सूर्योज्योतिः .....

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(उत्तर समिध्)

० ॐ अग्नेत्वंनो अंतमउतत्राता शिवोभवावरूथ्यः

(परिसमुहनं–पर्युक्षण)

० ॐ चमेस्वरश्चमे यज्ञोपचते नमश्च । यत्तेन्यूनं तस्मैत-उपयत्तेतिरिक्तं तस्मै ते नमः । विष्णवे नमो, विष्णवे नमो, विष्णवे नमः ॥

\+ \+ \+

संक्षिप्त प्राणायाम अभ्यास

१ पद्मासने–

२ भस्त्रिका ५०　　४ प्रणवजप १०

३ लोमविलोम १०　　५ मुहुर्तं निश्चलोभवेत्

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देवता गणेश ।

ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पति आनः शृण्वन् नूतिभिः सीदसादनम् ।

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि । त्वमेव केवलं कर्ताऽसि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्ताऽसि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अवत्वंमाम् । अव वक्तारम् । अवश्रोतारं । अव दातारं । अव धातारं । अवानूचानमवशिष्यं । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङमयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलोनभः। त्वंचत्वारिवाक् पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यं । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यं । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोऽम् । गणादिं पूर्वमुच्चार्य, वर्णादिं तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं । तारेण रुद्धं । एतत्तवमनुस्वरूपं । गकारः पूर्वरूपं । अकारो मध्यमरूपं । अनुस्वारश्चाँन्त्यरूपं। बिन्दुरुत्तररूपं। नादःसन्घानं। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या । गणक ऋषिः । निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

—एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।

—एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणं। रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजं। रक्तं लम्बोदरं शूर्पं कर्णकं रक्तवाससं । रक्तगंधानुलिप्तांङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् । एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो, व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेअस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्न-नाशिने शिवसुताय वरदमूर्तये नमः ॥

\+ \+ \+ \+

अथ रुद्रसूक्तानि ।

ॐ इडादेवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानिशँ-सिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः पृथिविमातर्मामाहिँसीर्मधुम-न्निष्येमधुजनिष्येमधुवक्ष्यामि मधुवदिष्यामिमघुमतींदेवे-भ्योवाचमुद्यासँशुश्रूषेण्यांमनुष्येभ्यस्तंमादेवाअवंतुशोभा-यैपितरोऽनुमदन्तु ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

१

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवउतोतइषवेनमः। नमस्ते अस्तु-धन्वनेबाहूभ्यामुततेनमः । यातइषुःशिवतमाशिवंबभूव-तेधनुः । शिवाशरव्यायातवतयानोरुद्रमृडय । यातेरुद्र-शिवातनूरघोरापापकाशिनी । तयानस्तनुवा शंतमया-गिरिशंताभिचाकशीहि । यामिषुंगिरिशंतहस्तेबिभर्ष्यं-स्तवे । शिवांगिरित्रतांकुरुमा हिँसीःपुरुषंजगत् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शिवेनवचसात्वागिरिशा च्छावदामसि । यथानःसर्वमि-
ज्जगदयक्ष्मँसुमनाअसत् । अध्यवोचदधिवक्ताप्रथमो-
दैव्योभिषक् । अहीँश्चसर्वान्जंभयन्त्सर्वांश्चयातुधान्यः।
असौयस्ताम्रो अरुणउतबभ्रुःसुमंगलः । येचेमाँरुद्राअभि-
तोदिक्षु श्रिताःसहस्रशोवैषाँहेडईमहे । असौयोऽवसर्प-
तिनीलग्रीवोविलोहितः । उतैनंगोपाअदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उतैनंविश्वाभूतानिसदृष्टोमृडयातिनः । नमोअस्तु नील-
ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे । अथोयेअस्यसत्वानोऽहंतेभ्यो-
करन्नमः। प्रमुंच्चधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्नियोर्ज्यां । याश्चते-
हस्तइषवःपराता भगवोवप । अवतत्यधनुस्त्वँ सहस्त्राक्ष-
शतेशुधे ॥ निशीर्यशल्यानां मुखाशिवोनः सुमनाभव।
विज्यंधनुःकपर्दिनोविशल्योबाणवाँउत । अनेशन्नस्येषव-
आभुरस्यनिषङ्गथिः। यातेहेतिर्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिब्भुज । नमस्तेअस्त्वा-
युधायानाततायधृष्णवे । उभाभ्यामुततेनमो बाहुभ्यां-
तवधन्वने । परितेधन्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः ।
अथोयइषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितम् ॥

२

ॐ नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशांचपतयेनमो नमो-
वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यःपशूनांपतयेनमो नमःसस्पिञ्जराय-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

त्विषीमतेपथीनांपतयेनमो नमोबभ्लुशायविव्याधिनेऽन्ना-
नांपतयेनमो नमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानांपतयेनमो
नमोभवस्यहेत्यैजगतांपतयेनमो नमोरुद्रा याऽऽतताविने-
क्षेत्राणांपतयेनमो नमःसूतायाहन्त्यायवनानांपतयेनमो
नमोरोहितायस्थपतयेवृक्षाणांपतयेनमो नमोमंत्रिणेवाणि-
जायकक्षाणां पतयेनमो नमोभुवन्तयेवारिवस्कृतायौषधी
नांपतयेनमो नमउच्चैर्घोषायाऽऽक्रंदयतेपत्तीनांपतयेनमो
नमःकृत्स्नवीतायधावतेसत्वनांपतयेनमः ॥

३

ॐनमः सहमानायनिव्याधिनआव्याधिनीनां पतये-
नमो नमः ककुभायनिषंगिणे, स्तेनानांपतयेनमो नमो-
निषङ्गिणइषुधिमते तस्कराणांपतयेनमोनमोवञ्चते-
परिवञ्चते स्तायूनांपतयेनमो नमो निचेरवेपरिचराया-
रण्यानांपतयेनमो नमःसृकाविभ्यो जिघाँसद्भ्योमुष्णतां-
पतयेनमो नमोऽसिमद्भ्योनक्तंचरद्भ्यःप्रकृन्तानांपतये-
नमो नमउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानांपतयेनमो नम-
इषुमद्भ्योधन्वाविभ्यश्चवोनमो नमआतन्वानेभ्यःप्रति-
दधानेभ्यश्चवोनमोनम आयच्छद्भ्योविसृजद्भ्यश्चवो-
नमो नमोऽस्यद्भ्योविध्यद्भ्यश्चवोनमो नमआसीनेभ्यः-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शयानेभ्यश्चवोनमो नमःस्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवोनमो नमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमो नमः सभाभ्यःसभापतिभ्यश्चवोनमो नमोअश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चवोनमः ॥

४

ॐ नमआव्याधिनीभ्योविविध्यन्तीभ्यश्चवोनमो नमउगणाभ्यस्तृँहतीभ्यश्चवोनमो नमोगृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवोनमो नमोव्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवोनमो नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमो नमोविरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्चवोनमो नमोमहद्भ्यः, क्षुल्लकेभ्यश्चवोनमो नमोरथी भ्योऽरथेभ्यश्चवोनमो नमोरथेभ्योरथपतिभ्यश्चवोनमो नमः सेनाभ्यःसेनानिभ्यश्चवोनमो नमः, क्षत्तृभ्यःसंग्रहीतृभ्यश्चवोनमो नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्चवोनमो नमःकुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्चवोनमो नमःपुञ्जिष्टेभ्योनिषादेभ्यश्चवोनमो नमइषुकृद्भ्योधन्वकृद्भ्यश्चवोनमो नमोमृगयुभ्यःश्वनिभ्यश्चवोनमो नमःश्वभ्यःश्वपतिभ्यश्चवोनमः ॥

५

ॐ नमोभवायचरुद्रायच नमःशर्वायचपशुपतयेच नमोनीलग्रीवाय चशितिकंठाय चनमःकपर्दिनेचव्युप्तके-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शायच्च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वनेच नमोगिरिशाय-
चशिपिविष्टायच नमोमीढ़ुष्टमायचेषुमतेच नमो,
ह्रस्वायचवामनायच नमोबृहतेचवर्षीयसेच नमो वृद्धाय-
चसंवृध्वनेच नमोअग्रियायचप्रथमायच नमआशवेचाजि-
रायच्च नमःशीघ्रियायचशीभ्यायच नमऊर्म्यायचावस्व-
न्यायच नमःस्रोतस्यायचद्वीप्यायच ॥

६

ॐ नमो, ज्येष्ठायचकनिष्ठायच नमःपूर्वजाय
चापरजायच नमोमध्यमायचापगल्भायच नमोजघन्या-
यचबुध्नियायचनमःसोभ्यायचप्रतिसर्यायच नमोयाम्या-
यचक्षेम्यायच नमउर्वर्यायचखल्यायच नमःश्लोक्यायचा-
वसान्यायच नमोवन्यायचकक्ष्यायच नमः श्रवायचप्रति-
श्रवायच्च नमआशुषेणायचाऽऽशुरथायचनमः शूरायचाव-
भिन्दतेच नमोवर्मिणेचवरूथिनेच नमोबिल्मिनेच कव-
चिनेच्च नमःश्रुतायचश्रुतसेनायच ॥

७

ॐ नमोदुन्दुभ्यचाऽऽहनन्यायच नमोधृष्णवेच
प्रमृशायच नमोदूतायचप्रहितायच नमोनिषङ्गिणेचेषु-
धिमतेच नमस्तीक्ष्णेषवेचाऽऽयुधिनेच नमःस्वायुधायच-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सुधन्वनेच नमःस्रुत्यायचपथ्यायच नमःकाट्यायचनी-
प्यायच नमःसूद्यायचसरस्यायच नमोनाद्यायचवैशन्तायच
नमःकूप्यायचावट्यायच नमोवर्ष्यायचावर्ष्यायच नमो-
मेघ्यायचविद्युत्यायच नमईध्रियायचातप्यायच नमो-
वात्यायच रेश्मियायच नमोवास्तव्यायचवास्तुपायच ॥

८

ॐ नमःसोमायचरुद्रायच नमस्ताम्रायचारुणायच
नमःशंगायचपशुपतयेच नमउग्रायचभीमायच नमोअग्रेव-
धायचदूरेवधायच नमोहन्त्रेचहनीयसेच नमोवृक्षेभ्यो
हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शंभवेचमयोभवेच नमः-
शंकरायचमयस्करायच नमःशिवायचशिवतरायच नमः-
स्तीर्थ्यायच कूल्यायच नमःपार्यायचावार्यायच नमःप्रत-
रणायचोत्तरणायच नमआतार्याय चाऽऽलाद्यायच नमः
शष्प्यायच फ़ेन्यायच नमःसिकत्यायचप्रवाह्यायच ॥

९

ॐ नमइरिण्यायचप्रपथ्यायच नमःकिँशिलायच-
क्षयणायच नम कपर्दिनेचपुलस्तयेच नमोगोष्ठ्यायचगृ-
ह्यायच नमस्तल्प्यायचगेह्यायच नमःकाट्यायचगह्वरे-
ष्ठायच नमो, हृदय्यायचनिवेष्प्यायच नमःपाँसव्यायच-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रजस्यायच नमः शुष्क्यायचहरित्यायच नमो लोप्याय-चोलप्यायच नमऊर्व्यायचसूर्म्यायच नमःपर्ण्यायचपर्णश-द्यायच नमोऽपगुरमाणायचाभिघ्नतेच नमआक्खिदतेच-प्रक्खिदतेच नमोवःकिरिकेभ्योदेवानाँहृदयेभ्यो नमो-विक्षीणकेभ्यो नमोविचिन्वत्केभ्यो नमआनिर्हतेभ्यो नम-आमीवत्केभ्यः ॥

१०

ॐ द्रापेअन्धसस्पतेदरिद्रन्नीललोहित । एषां पुरु-षाणामेषांपशूनांमाभेर्मारोमोएषांकिंचनाऽममत् । याते-रुद्रशिवातनूःशिवाविश्वाहभेषजी ॥ शिवारुद्रस्यभेषजी-तयानोमृडजीवसे ॥ इमाँरुद्रायतवसे कपर्दिने, क्षयद्वी-रायप्रभरामहेमतिम् । यथानःशमसद्द्विपदे चतुष्पदेविश्वं-पुष्टंग्रामेअस्मिन्ननातुरम् ॥ मृडानोरुद्रो तनोमयस्कृधि-क्षयद्वीरायनमसा विधेमते । यच्छं च योश्चममुरायजे-पितातदश्यामतवरुद्रप्रणीतौ ॥ मानो महान्तमुतमानो-अर्भकंमानउक्षन्तमुतमान उक्षितम् । मानोवधीःपितरं-मोतमातरं प्रियामानस्त नुवोरुद्ररीरिषः । मानस्तोकेतन-येमानआयुषि मानो गोषुमानोअश्वेषुरीरिषः । वीरान्मा-नोरुद्रभामितो वधीर्हविष्मन्तोनमसाविधेमते । आरात्ते-गोघ्नउतपूरुषघ्नेक्षयद्वीरायसुम्नमस्मेतेअस्तु। रक्षाचनोअ-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धिचदेवब्रूह्यधाचनःशर्मयच्छद्विबर्हाः । स्तुहिश्रुतंगर्तसदं-युवानं मृगंनभीममुपहत्नुमुग्रम् ।। मृडाजरित्रेरुद्रस्तवानो-अन्यंतेअस्मन्निवपंतुसेनाः ।। परिणो रुद्रस्यहेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्यदुर्मतिरघायोः । अव स्थिरामघवद्भ्यस्त-नुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृडय । मीढुष्टमशिवतम-शिवोनःसुमनाभव । परमेवृक्षआयुधंनिधायकृत्तिंवसान-आचरपिनाकंविभ्रदागहि । विकिरिदविलोहितनमस्ते-अस्तुभगवः । यास्ते सहस्रँ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तुताः ।। सहस्राणिसहस्रधाबाहुवोस्तव हेतयः । तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि ।।

११

ॐ सहस्राणिसहस्रशोयेरुद्राअधिभूम्याम् । तेषाँ-सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि । अस्मिन्महत्यर्णवेऽतरिक्षे-भवाअधि । नीलग्रीवाः शितकंठाःशर्वाअधः, क्षमाचराः । नीलग्रीवाः शितिकंठादिवँरुद्राउपश्रिताः । येवृक्षेषुसस्पि-ञ्जरानीलग्रीवाविलोहिताः । येभूतानामधिपतयोविशि-खासःकपर्दिनः । येअन्नेषुविविध्यन्ति पात्रेषुपिबतोजनान् । येपथांपथिरक्षय ऐलबृदायव्युधः । येतीर्थानिप्रचरन्ति-सृकावन्तो निषंगिणः । य एतावन्तश्च भूयाँसश्चदिशो रुद्रावितस्थिरे ।। तेषाँसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥)

ॐ नमोरुद्रेभ्यो येपृथिव्यांयेऽन्तरिक्षेयेदिवियेषा-मन्नं वातोवर्षमिषवस्तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादश प्रती-चीर्दशोदीचीर्दशोध्र्वास्तेभ्योनमस्तेनोमृडयन्तुतेयंद्विष्मोय-श्चनोद्वेष्टितंवोजम्भेदधामि ॥

ॐ अग्नाविष्णूसजोषसेमावर्धन्तुवांगिरः । द्युम्नै-र्वाजेभिरागतम् ॥ आयुर्यज्ञेनकल्पतांप्राणोयज्ञेनकल्पता-मपानोयज्ञेनकल्पतांव्यानोयज्ञेनकल्पतांचक्षुर्यज्ञेनकल्पताँ श्रोत्रंयज्ञेनकल्पतांमनोयज्ञेनकल्पतांवाग्यज्ञेनकल्पतामात्मा यज्ञेनकल्पतां यज्ञोयज्ञेनकल्पताम् ॥

शिवसंकल्पसूक्त ।

यज्जाग्रतो दूरमूदैतिदैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वंति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमंतःप्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरंतरमम‍ृतं प्रजासु । यस्मान्नऋते किंचनकर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सर्वं । येन यज्ञस्तयते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। यस्मिन् ऋचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथानाभाविवाराः । यस्मिँश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। सुषारथिरश्वा निवयन्मनुष्यान्नेनीयते भीषुभिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं यविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

अथ सौरसूक्तानि ।

यउदगान्महतोऽर्णवात्विभ्राजमानश्शरीरस्यमध्यात् ।
स मावृषभोलोहिताक्षस्सूर्योविपश्चिन्मनसापुनातु ।।

ॐ उदुत्यंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः । दृशेविश्वायसूर्यम् ।। अपत्येतायवोयथानक्षत्रायंत्यक्तुभिः । सूरायविश्वचक्षसे ।। अदृश्रमस्यकेतवो विरश्मयो जनाँअनु । भ्राजंतो अग्नयोयथा ।। तरणिर्विश्व दर्शतोज्योतिष्कृदसिसूर्य । विश्वमाभासिरोचनम् ।। प्रत्यङ्देवानांविशः प्रत्यङ्उदेषिमानुषान् । प्रत्यङ्विश्वंस्वर्दृशे ।। येनापावकचक्षसाभुरण्यंतंजनाँ अनु । त्वंवरुणपश्यसि ।। विद्यामेषिरजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः । पश्यन्जन्मानिसूर्य ।। सप्तत्वाहरितो रथेवहंतिदेवसूर्य । शोचिष्केशंविचक्षण ।। अयुक्त सप्तशुन्ध्युवः सूरोरथस्यनप्त्यः । ताभिर्यातिस्व-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

युक्तिभिः ॥ उद्वयन्तमसस्परिज्योतिष्पश्यन्तउत्तरम् । देवंदेवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमं ॥ उद्यन्नद्यमित्रमहआरोहन्नुत्तरांदिवं । हृद्रोगंममसूर्यंहरिमाणं च नाशय ॥ शुकेषुमेहरिमाणंरोपणाकासुदध्मसि । अथोहारिद्रवेषुमेहरिमाणं निदध्मसि उदगादयमादित्योविश्वेन सहसासह । द्विषंतंमह्यंरधयन्मो अहंद्विषतेरधं ॥

● चित्रंदेवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवीअन्तरिक्षं सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ सूर्योदेवीमुषसं रोचमानांमर्योनयोषामभ्येतिपश्चात् । यत्रानरो देवयंतोयुगानिवितन्वतेप्रतिभद्रायभद्रं ॥ भद्रा अश्वाहरितः सूर्यस्यचित्राएतग्वाअनुमाद्यासः ॥ नमस्यंतोदिवऽआपृष्ठमस्थुःपरिद्यावापृथिवीयंति सद्यः ॥ तत्सूर्यस्यदेवत्वंतन्महित्वंमध्याकर्तोर्विततं संजभार । यदेदयुक्तहरितःसधस्थादाद्रात्रीवास स्तनुते सिमस्मै ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षेसूर्योरूपंकृणुतेद्यौरुपस्थे ॥ अनंतमन्यदृशदस्यपाजः कृष्णमन्यद्धरितःसम्भरंति ॥ अद्यादेवाउदिता सूर्यस्यनिरंहसःपिपृतानिरवद्यात् । तन्नो मित्रोवरुणोमामहन्तामदितिः सिंधुः पृथिवी उतद्यौः ॥

● इन्द्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुरथोदिव्यः ससुपर्णोगरुत्मान् । एकंसद्विप्राबहुधावदंत्यग्निंयमंमातरिश्वानमाहुः ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कृष्णंनियानं हरयःसुपर्णा अपोवसाना दिवमुत्पतन्ति ।। तआववृत्रन्त्सदनादृतस्या दिद्धृतेनपृथिवीव्युद्यते ।। हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऋतजाअद्रिजाऋतं ।। यत्वासूर्यस्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविध्यथा मुग्धोभुवनान्यदीधयुः ।। यदद्यसूर्यब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय-वरुणायसत्यम् ।। वयंदेवत्रादितेस्याम तवप्रियासो अर्यं-मन्गृणन्तः ।। उत्सूर्यो बृहदर्चींष्य श्रेत्पुरुविश्वाजनिममा-नुषाणाम् । समो दिवाददृशे रोचमानः क्रत्वाकृतःसुकृतः कर्तुभिर्भूत् ।। ससूर्यं प्रतिपुरोनउद्गाएभिः स्तोमेभि-रेतशेभिरेवैः । प्रनोमित्रायवरुणाय वोचोऽनागसोअर्यम्णे-अग्नयेच ।। विनःसहस्रंशुरुधोरदन्त्वृतावानोवरुणोमित्रो-अग्नि: । यच्छन्तुचन्द्राउपमंनोअर्कमानः कामंपू पूरंतु-स्तवानाः ।।

● उद्वेति सुभगोविश्वचक्षाः साधारणः सूर्योमानु-षाणाम् । चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्य देवश्चर्मेवयः समविव्यक्त-मांसि ।। उद्वेतिप्रसवीताजनानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य ।। समानंचक्रंपर्याविवृत्सन्यदेतशोवहतिधूर्षुयुक्तः ।। विभ्राज-मानउषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।। एषमेदेवःसवि-ताचच्छंदयः समानंन प्रमिनातिधाम ।। दिवोरुक्मउरु-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चक्षाउदेतिदूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः । नूनं जनाःसूर्येण-प्रसूताअयन्नर्थानिकृणवन्नपांसि ।। यत्राचकृरमृतागातु-मस्मैश्येनोन दीयन्नन्वेतिपाथः ।। उदुत्यद्दर्शतंवपुर्दिव-एतिप्रतिह्वरे ।। यदीमाशुर्वहतिदेवएतशोविश्वस्मैचक्ष-सेअरं ।। शीर्ष्णः शीर्ष्णोजगतस्तस्थुषस्पतिसमयाविश्व-मारजः ।। सप्त स्वसारः सुवितायसूर्यंवहन्तिहरितोरथे ।। तच्चक्षुर्देवहितंशुक्रमुच्चरत् ।। पश्येमशरदःशतञ्जीवेम-शरदःशतम् ।। बण्महाँअसिसूर्यबळादित्यमहाँअसि । महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँअसि । बट्सूर्यश्रव-सामहाँअसिसत्रादेवमहाँअसि ।। मह्नादेवानामसूर्यः पुरोहितोविभुज्योतिरदाभ्यम् ।।

● नमोमित्रस्यवरुणस्यचक्षसेमहोदेवायतदृतंसपर्यत।। दूरेदृशेदेवजातायकेतवेदिवस्पुत्रायसूर्याय शंसत । सामा-सत्योक्तिः परिपातुविश्वतोद्यावाच यत्रततनन्नहानिच ।। विश्वमन्यंनिविशते यदेजति विश्वाहापोविश्वाहोदेति-सूर्यः ।। नतेअदेवः प्रदिवोनि वासतेयदेतशेभिः पतरैर-थर्यसि ।। प्राचीनमन्यदनुवर्तते रजउदन्येनज्योतिषाया-सिसूर्य।। येनसूर्यज्योतिषाबाधसेतमोजगच्चविश्वमुदियर्षि भानुना ।। तेनास्मद्विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामपदु:-ष्वप्न्यं सुव ।। विश्वस्यहिप्रेषितोरक्षसिव्रतमहेळयन्नु-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

च्चरसि स्वधाअनु ।। यदद्यत्वासूर्योपब्रवामहैतन्नोदेवाअनुमंसीरतक्रतुम् ।। तन्नोद्यावापृथिवीतन्नआपइन्द्रः श्रृण्वन्तु-मरुतोहवंवचः । माशूनेभूमसूर्यस्यसन्दृशि भद्रंजीवन्तो-जरणामशीमहि । विश्वाहात्वासुमनसः सुचक्षसः प्रजा-वन्तोअनमीवाअनागसः । उद्यन्तं त्वामित्रमहो दिवेदिवे-ज्योग्जीवाः प्रतिपश्येमसूर्यं ।। महिज्योतिर्विभ्रतंत्वा-विचक्षण भास्वन्तंचक्षुषेचक्षुषे मयः ।। आरोहन्तंबृहतः पाजसस्परिवयंजीवाःप्रति पश्येमसूर्यं ।। यस्यतेविश्वा-भुवनानिकेतुनाप्रचेरतेनि चविशन्तेअक्तुभिः ।। अनागा-स्त्वेनहरिकेशसूर्या ह्नाह्नानोवस्यसावस्यसोदिहि ।। शंनोभव चक्षसाशंनोअह्नाशंभानुनाशंहिमाशं घृणेन । यथाशमध्वंच्छमसद्दुरोणेत्सूर्यद्रविणंधेहिचित्रं । अस्मा-कंदेवा उभयायजन्मनेशर्मयच्छतद्विपदेचतुष्पदे । अदत्पिबदूर्जंयमानमाशितंतदस्मेशंयोररपोदधातन ।। यद्वो देवाश्चकृमजिह्वयागुरुमनसोवाप्रयुतीदेवहेळनम् ।। अरा-वायोनोअभिदुच्छुनायतेतस्मिन्तदेनोवसवोनिधेतन ।

● सूर्योनोदिवस्पातुवातोअन्तरिक्षात् । अग्निर्नः-पार्थिवेभ्यः ।। जोषासवितर्यस्यतेहरःशतं सवाँअर्हति । पाहिनोदिद्युतः पतंत्याः ।। चक्षुर्नो देवःसविताचक्षुर्नउत-पर्वतः । चक्षुर्धातादधातुनः ।। चक्षुर्नोधेहिचक्षुषेचक्षुर्वि-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ख्यैतनूभ्यः । संचेदंविचपश्येम ।। सुसंदृशंत्वावयंप्रति-
पश्येमसूर्य । विपश्येम नृचक्षसः ।। विभ्राड्वृहत्पिबतु-
सोम्यंमध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतं ।। वातजूतोयोअभिरक्ष-
तित्मना प्रजाः पुपोषपुरुधाविराजति ।। विभ्राड्वृहत्सुभृतं-
वाजसा तमंधर्मंदिवोधरुणेसत्यमर्पितं । अमित्रहावृत्रहा-
दस्यु हन्तमंज्योतिर्जज्ञेअसुरहासपत्नहा ।। इदंश्रेष्ठंज्यो-
तिषांज्योतिरुत्तमंविश्वजिद्धनजिदुच्यतेवृहत् ।। विश्वभ्रा-
ड्भ्राजोमहिसूर्योदृशउरुपप्रथे सहओजो अच्युतं ।। विभ्रा-
जंज्योतिषास्व १ रगच्छोरोचनं दिवः । येनेमाविश्वा-
भुवनान्याभृताविश्व कर्मणा विश्वदेव्यावता ।। आयंगौः
पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ।। पितरंचप्रयन्स्वः ।।
अन्तश्चरतिरोचनास्य प्राणादपानती ।। व्यख्यन्महिषो-
दिवं । त्रिंशद्धाम विराजतिवाक्पतंगाय धीयते ।
प्रतिवस्तोरहद्युभिः ।

सवितापश्चात्तात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्स-
विताधरात्तात् । सवितानःसुवतुसर्वतातिंसवितानो
रासतांदीर्घमायुः ।।

\+ \+ \+ \+

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अथ पवमानसूक्तम् ।

ॐ स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया । इन्द्रायपातवेसुतः ॥

\+ \+ \+ \+

ॐ त्वं सोमासिधारयुर्मन्द्रऽओजिष्ठोऽअध्वरे । पवस्वमंहयद्रयिः ॥
त्वंसुतोनृमादनोदधन्वान्मत्सरिन्तमः । इन्द्रायसूरिरंधसा ॥
त्वंसुष्वाणोऽअद्रिभिरभ्यर्षकनिक्रदत् । द्युमन्तंशुष्ममुत्तमम् ॥
इन्दुर्हिन्वानोऽअर्षतितिरोवाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥
इन्दोव्यव्यमर्षसिविश्रवांसि विसौभगा । विवाजान्त्सोमगोमतः॥
आनऽइन्दोशतग्विनंरयिंगोमंतमश्विनं । भरा सोमसहस्त्रिणं ॥
पवमानासऽइन्दवस्तिरःपवित्रमाशवः । इन्द्रंयामेभिराशत ॥
ककुहःसोम्यो रसऽइन्दुरिन्द्रायपूर्व्यः । आयुःपवतऽआयवे ॥
हिन्वन्तिसूरमुस्रयःपवमानंमधुश्चुतं । अभि गिरासमस्वरन् ॥
अवितानोऽअजाश्वःपूषायामनियामनि । आभक्षत्कन्यासुनः ॥
अयंसोमःकपर्दिनेघृतंनपवतेमधु । आभक्षत्कन्यासुनः ॥
अयंतऽआघृणेसुतोघृतंनपवतेशुचि । आभक्षत्कन्यासुनः ॥
वाचोजन्तुःकवीनांपवस्वसोमधारया । देवेषुरत्नधाऽअसि ॥
आकलशेषुधावतिश्येनोवर्मविगाहते । अभिद्रोणाकनिक्रदत् ॥
परिप्रसोमतेरसोसर्जिकलशेसुतः । श्येनोनतक्तोऽअर्षति ॥
पवस्वसोममन्दयन्निन्द्रायमधुमत्तमः ॥
असृग्रन्देववीतयेवाजयन्तोरथाऽइव ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तेसुतासोमदिन्तमाःशुक्रावायुमसृक्षत ।।

ग्राव्णातुन्नोऽअभिष्टुतःपवित्रंसोमगच्छसि । दधत्स्तोत्रेसुवीर्यं ।।

एषतुन्नोऽअभिष्टुतःपवित्रमतिगाहते । रक्षोहावारमव्ययं ।।

यदन्तियच्चदूरकेभयंविन्दतिमामिह । पवमानवितज्जहि ।।

पवमानःसोऽअद्यनःपवित्रेण विचर्षणिः । यःपोतासपुनातुनः ।।

यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्नेविततमंतरा । ब्रह्मतेनपुनीहिनः ।।

यत्तेपवित्रमर्चिवदग्नेतेनपुनीहिनः । ब्रह्मसवैःपुनीहिनः ।।

उभाभ्यांदेवसवितःपवित्रेणसवेनच । मांपुनीहिविश्वतः ।।

त्रिभिष्ट्वंदेवसवितर्वर्षिष्ठैःसोमधामभिः । अग्नेदक्षैःपुनीहिनः ।।

पुनंतुमांदेवजनाःपुनंतुवसवोधिया ।

विश्वेदेवाःपुनीतमाजातवेदःपुनीहिमा ।।

प्रप्यायस्वप्रस्यंदस्वसोमविश्वेभिरंशुभिः । देवेभ्यऽउत्तमंहविः ।।

उपप्रियंपनिप्नतंयुवानमाहुतीवृधं । अगन्मबिभ्रतोनमः ।।

अलाय्यस्यपरशुर्ननाशतमापवस्वदेवसोम । आखुंचिदेवदेवसोम ।।

यःपावमानीरध्येत्यृषिभिःसंभृतंरसं ।

सर्वंसपूतमश्नातिस्वदितंमातरिश्वना ।।

पावमानीर्योऽध्येत्यृषिभिःसंभृतंरसं ।

तस्मैसरस्वतीदुहेक्षीरंसर्पिर्मधूदकम् ।।

\+ \+ \+ \+

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुप्रचोदयात् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देवीसूक्त ।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरा म्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणोभा विभर्म्यहमिंद्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगं। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये ३ यजमानाय सुन्वते ॥ अहं राष्ट्री संगमनीवसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्याविशयंतीम् ॥ मया सो अन्नमत्तियो विपश्यति यःप्राणिति यईं शृणोत्युक्तं । अमन्तवो मां त उपक्षियंति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः । यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधां ॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवाउ । अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ अहं सुवे पितरमस्य-मूर्धन् ममयोनिरप्स्वं १ तः समुद्रे । ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वो तामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि ॥ अहमेव वात इव प्रवाम्या रभमाणा भुवनानि विश्वा । परोदिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥

\+ \+ \+ \+

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हिरण्य गर्भ सूक्त ।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वै क इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदःकस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवीच दृळ्हा येनस्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अंतरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यं क्रंदसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतॉं मनसा रेजमाने ।
यत्राधिसूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

आपोह यब्दृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयंतीरग्नि ।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यश्चिदापो महिना पर्यश्यद्दक्षं दधाना जनयंतीर्यज्ञं ।
यो देवेष्वधिदेव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानोहिंसीज्जनिता यःपृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चंद्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

\+ \+ \+

अग्निसूक्त ।

ॐ अग्नि मीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं। होतारं रत्न धातमं ।। अग्निः पूर्वेभिऋषिभिरीडयो नूतनैरुत । सदेवां एह वक्षति ।। अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे-दिवे । यशसं वीरवत्तमं ।। अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि । सइद्देवेषु गच्छति ।। अग्निर्होता कविक्रतु सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरागमत् ।।

यदंगदाषुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेतत् सत्यमं-गिरः ।। उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयं । नमो-भरंत एमसि ।। राजंतमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवं । वर्धमानं स्वेदमे ।। सनःपितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव । सचस्वानः स्वस्तये ।।

\+ \+ \+

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रीविष्णुसहस्रनाम ।

(तुलसीदलार्चन)

शांताकारं, भुजगशयनं, पद्मनाभंसुरेशं । विश्वाधारं, गगनसदृशं, मेघवर्णंशुभांगम् । लक्ष्मीकांतं, कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यं । वन्देविष्णुं, भवभयहरं, सर्वलोकैक-नाथम् ।। ॐ नमोभगवते वासुदेवाय । विष्णवे नमः ।।

\+ \+ \+

ॐविश्वंविष्णुर्वषट्कारो, भूतभव्यभवत्प्रभुः । भूत-कृद्भूतभृद्भावो, भूतात्माभूतभावनः ।१। पूतात्मापरमा-त्माच्च, मुक्तानांपरमागतिः । अव्ययःपुरुषःसाक्षी, क्षेत्रज्ञो-ऽक्षरएवच ।२। योगोयोगविदांनेता, प्रधानपुरुषेश्वरः । नारसिंहवपुःश्रीमान्, केशवःपुरुषोत्तमः ।३। सर्वः शर्वः शिवःस्थाणुर, भूतादिर्निधिरव्ययः । संभवोभावनोभर्ता, प्रभवःप्रभुरीश्वरः ।४। स्वयंभूःशंभुरादित्यः, पुष्कराक्षो महास्वनः । अनादिनिधनोधाता, विधाताधातुरुत्तमः ।५। अप्रमेयोहृषीकेशः, पद्मनाभोऽमरप्रभुः । विश्वकर्मामनु-स्त्वष्टा, स्थविष्ठः स्थविरोध्रुवः ।६। अग्राह्यःशाश्वतः-कृष्णो, लोहिताक्षः प्रतर्दनः प्रभूतस्त्रिककुब्धाम, पवित्रं-मंगलंपरम् ।७। ईशानः प्राणदःप्राणो, ज्येष्ठःश्रेष्ठः-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रजापतिः। हिरण्यगर्भोभूगर्भो, माधवो मधुसूदनः।८।
ईश्वरोविक्रमीधन्वी, मेधावीविक्रमःक्रमः । अनुत्तमो-
दुराधर्षः, कृतज्ञःकृतिरात्मवान् ।९। सुरेशःशरणंशर्म,
विश्वरेताः प्रजाभवः । अहःसंवत्सरोव्यालः, प्रत्ययः
सर्वदर्शनः।१०। अजःसर्वेश्वरःसिद्धःसिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
(100) वृषाकपिरमेयात्मा, सर्वयोगविनिःसृतः ।११।
वसुर्वसुमनाःसत्यः, समात्मासंमितः समः। अमोघःपुण्ड-
रीकाक्षो, वृषकर्मावृषाकृतिः ।१२। रुद्रो बहुशिराबभ्रुर्,
विश्वयोनिःशुचिश्रवाः । अमृतःशाश्वतःस्थाणुर्, वरा-
रोहोमहातपाः ।१३। सर्वगःसर्वविद्भानुर्, विष्वक्सेनो
जनार्दनः। वेदोवेदविदव्यंगो, वेदांगोवेदवित् कविः।१४।
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो, धर्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरा-
त्माचतुर्व्यूहश्, चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः।१५। भ्राजिष्णुर्भोजनं-
भोक्ता, सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघोविजयोजेता, विश्व-
योनिःपुनर्वसुः ।१५। उपेन्द्रोवामनः प्रांशु, रमोघः शुचि-
रूर्जितः। अतींद्रः संग्रहःसर्गो, धृतात्मानियमोयमः।१७।
वेद्योवैद्यः सदायोगी, वीरहामाधवो मधुः। अतींद्रियो-
महामायो, महोत्साहोमहाबलः ।१८। महाबुद्धिर्महावीर्यो,
महाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमान्, अमेयात्मा-
महाद्रिधृक् ।१९। महेष्वासोमहीभर्ता, श्रीनिवासः सतां-
गतिः। अनिरुद्धःसुरानन्दो गोविंदोगोविदांपतिः।२०।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मरीचिर्दमनोहंसः, सुपर्णोभुजगोत्तमः । हिरण्यनाभः-सुतपाः, पद्मनाभःप्रजापतिः ।२१। अमृत्युःसर्वदृक्सिंहः, (200) ● संधातासंधिमान् स्थिरः। अजोदुर्मर्षणःशास्ता, विश्रुतात्मासुरारिहा ।२२। गुरुर्गुरुत्तमोधाम, सत्यःसत्य-पराक्रमः । निमिषोऽनिमिषःस्रग्वी, वाचस्पतिरुदारधीः ।२३। अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्, न्यायोनेता समीरणः । सहस्रमूर्धाविश्वात्मा, सहस्राक्षःसहस्रपात्।२४। आवर्तनो-निवृत्तात्मा, संवृतःसंप्रमर्दनः । अहः संवर्तकोवह्नि, रनिलोधरणीधरः।२५। सुप्रसादः प्रसन्नात्मा, विश्वधृग्वि-श्वभुग्विभुः । सत्कर्तासत्कृतःसाधुर्, जह्नुर्नारायणोनरः ।२६। असंख्येयोऽप्रमेयात्मा, विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः । सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः, सिद्धिदः सिद्धिसाधनः।२७। वृषा-हीवृषभो विष्णुर्, वृषपर्वावृषोदरः । वर्धनोवर्धमानश्च, विविक्तःश्रुतिसागरः ।२८। सुभुजोदुर्धरोवाग्मी, महेंद्रो-वसुदोवसुः । नैकरूपोबृहद्रूपः, शिपिविष्टः प्रकाशनः।२९। ओजस्तेजोद्युतिधरः, प्रकाशात्माप्रतापनः। ऋद्धः स्पष्टा-क्षरोमंत्रश्, चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ३०। अमृतांशूद्भवो-भानुः, शशबिंदुःसुरेश्वरः। औषधं जगतःसेतुः, सत्यधर्म-पराक्रमः ।३१। भूतभव्यभवन्नाथः, पवनः पावनोऽनलः । कामहाकामकृत्कांतः, कामःकामप्रदःप्रभुः ।३२। युगादि-कृद् (300) ● युगावर्तो, नैकमायोमहाशनः । अदृश्योऽ—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

व्यक्तरूपश्च, सहस्रजिदनंतजित् ।३३। इष्टोविशिष्टः-
शिष्टेष्टः शिखंडीनहुषोवृषः। क्रोधहाक्रोधकृत्कर्ता, विश्व-
बाहुर्महीधरः ।३४। अच्युतःप्रथितः प्राणः, प्राणदोवास-
वानुजः । अपांनिधिरधिष्ठान, मप्रमत्तःप्रतिष्ठितः ।३५।
स्कंदःस्कंदधरोधुर्यो, वरदोवायुवाहनः। वासुदेवोबृहद्भानु,
रादिदेवःपुरंदरः ।३६। अशोकस्तारणस्तारः, शूरःशौरि-
र्जनेश्वरः । अनुकूलःशतावर्तः, पद्मीपद्मनिभेक्षणः ।३७।
पद्मनाभोऽरविंदाक्षः पद्मगर्भःशरीरभृत् । महर्धिऋद्धो
वृद्धात्मा, महाक्षोगरुडध्वजः।३८। अतुलःशरभोभीमः सम
यज्ञोहविर्हरिः। सर्वलक्षणलक्षण्यो, लक्ष्मीवान्समितिंजयः
।३९। विक्षरोरोहितोमार्गो हेतुर्दामोदरःसहः । महीधरो-
महाभागो, वेगवानमिताशनः ।४०। उद्भवःक्षोभणोदेवः,
श्रीगर्भःपरमेश्वरः । करणंकारणंकर्ता, विकर्तागहनो गुहः
।४१। व्यवसायोव्यवस्थानः, संस्थानःस्थानदोध्रुवः ।
परर्धिःपरमः स्पष्टस्, तुष्टःपुष्टः शुभेक्षणः ।४२।
रामोविरामोविरंजो, मार्गोनेयोनयोऽनयः । (400)
● वीरःशक्तिमतांश्रेष्ठो, धर्मोधर्मविदुत्तमः ।४३।
वैकुंठःपुरुषः प्राणः, प्राणदःप्रणवःपृथुः । हिरण्यगर्भः-
शत्रुघ्नो, व्याप्तोवायुरधोक्षजः ।४४। ऋतुःसुदर्शनःकालः,
परमेष्ठीपरिग्रहः । उग्रःसंवत्सरोदक्षो, विश्रामोविश्व-
दक्षिणः।४५। विस्तारःस्थावरःस्थाणुः, प्रमाणंबीजमव्ययम्।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थोऽनर्थोमहाकोशो, महाभोगोमहाधनः ।४६। अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्, धर्मयूपोमहामखः । नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री, क्षमःक्षामःसमीहनः ।४७। यज्ञइज्योमहेज्यश्च, क्रतुःसत्रंसतांगतिः । सर्वदर्शीविमुक्तात्मा, सर्वज्ञोज्ञानमुत्तमम् ।४८। सुव्रतःसुमुखःसूक्ष्मः, सुघोषःसुखदःसुहृत् । मनोहरो जितक्रोधो, वीरबाहुर्विदारणः ।४९। स्वापनः स्ववशोव्यापी, नैकात्मानैककर्मकृत् । वत्सरोवत्सलोवत्सी, रत्नगर्भोधनेश्वरः ।५०। धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी, सदसत्क्षरमक्षरम् । अविज्ञातासहस्रांशुर्, विधाताकृतलक्षणः ।५१। गभस्तिनेमिः सत्वस्थः, सिंहोभूत महेश्वरः । आदिदेवोमहादेवो, देवेशोदेवभृद्गुरुः ।५२। उत्तरो गोपतिर्गोप्ता, ज्ञानगम्यः पुरातनः । शरीरभूतभृद्भोक्ता (500) ● कपींद्रोभूरिदक्षिणः ।५३। सोमपोऽमृतपःसोमः, पुरुजित्पुरुसत्तमः । विनयोजयःसत्यसंधो, दाशार्हःसात्वतांपतिः ।५४। जीवोविनयितासाक्षी, मुकुंदोऽमितविक्रमः । अंभोनिधिरनंतात्मा, महोदधिशयोंऽतकः ।५५। अजोमहार्हःस्वाभाव्यो, जितामित्रः प्रमोदनः । आनन्दोनंदनोनंदः, सत्यधर्मात्रिविक्रमः ।५६। महर्षिः कपिलाचार्यः, कृतज्ञोमेदिनीपतिः । त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृंगः कृतांतकृत् ।५७। महावराहोगोविंदः, सुषेणःकनकांगदी । गुह्योगभीरोगहनो, गुप्तश्चक्रगदाधरः ।५८। वेधाःस्वांगोऽजितःकृष्णो, दृढःसंकर्ष-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

णोऽच्युतः । वरुणोवारुणोवृक्षः, पुष्कराक्षोमहामनाः ।५९। भगवान्भगहानंदी, वनमालीहलायुधः। आदित्योज्योतिरादित्यः, सहिष्णुर्गतिसत्तमः ।६०। सुधन्वा खंडपरशुर्, दारुणोद्रविणप्रदः । दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो, वाचस्पतिरयोनिजः ।६१। त्रिसामासामगःसाम, निर्वाणंभेषजभिषक् । संन्यासकृच्छमःशांतो, निष्ठाशांतिःपरायणः ।६२। शुभांगःशांतिदःस्रष्टा, कुमुदःकुवलेशयः । गोहितोगोपतिर्गोप्ता, वृषभाक्षोवृषप्रियः ।६३। अनिवर्तीनिवृत्तात्मा, संक्षेप्ताक्षेमकृच्छिवः। (600) श्रीवत्सवक्षाःश्रीवासः, श्रीपतिःश्रीमतांवरः।६४। श्रीदःश्रीशः श्रीनिवासः, श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरःश्रीकरः श्रेयः, श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ।६५। स्वक्षःस्वंगःशतानंदो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः । विजितात्माविधेयात्मा, सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ।६६। उदीर्णःसर्वतश्चक्षु, रनीशःशाश्वतः स्थिरः। भूशयोभूषणोभूतिर्, विशोकःशोकनाशनः।६७। अर्चिष्मानर्चितःकुंभो, विशुद्धात्माविशोधनः । अनिरुद्धोऽप्रतिरथः, प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।६८। कालनेमिनिहावीरः, शौरिःशूरजनेश्वरः । त्रिलोकात्मात्रिलोकेशः, केशवःकेशिहाहरिः ।६९। कामदेवःकामपालः, कामीकांतःकृतागमः । अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर् वीरोऽनंतोधनंजयः ।७०। ब्रह्मण्योब्रह्मकृत् ब्रह्मा, ब्रह्मब्रह्म विवर्धनः । ब्रह्मविद्-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्राह्मणोब्रह्मी ब्रह्मज्ञोब्राह्मणप्रियः ।७१। महाक्रमोमहा-
कर्मा, महातेजामहोरगः । महाक्रतुर्महायज्वा, महायज्ञो-
महाहविः ।७२। स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोत्रं, स्तुतिःस्तोतारण-
प्रियः । पूर्णःपूरयितापुण्यः, पुण्यकीर्तिरनामयः ।७३।
मनोजवस्तीर्थकरो, वसुरेतावसुप्रदः । वसुप्रदोवासुदेवो,
वसुर्वसुमनाहविः ।७४। सद्गतिःसत्कृतिः (700) ● सत्ता-
सद्भूतिःसत्परायणः । शूरसेनोयदुश्रेष्ठः, सन्निवासः-
सुयामुनः ।७५। भूतावासोवासुदेवः, सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहादर्पदोदृप्तो, दुर्धरोऽथापराजितः ।७६। विश्वमूर्ति
र्महामूर्तिर्, दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् । अनेकमूर्तिरव्यक्तः,
शतमूर्तिःशताननः ।७७। एकोऽनैकःसवःकःकिं, यत्तत्पद-
मनुत्तमम् । लोकबन्धुर्लोकनाथो, माधवोभक्तवत्सलः
।७८। सुवर्णवर्णोहेमांगो, वरांगश्चंदनांगदी । वीरहा-
विषमःशून्यो, धृताशीरचलश्चलः ।७९। अमानीमान-
दोमान्यो, लोकस्वामीत्रिलोकधृक् । सुमेधामेधजोधन्यः,
सत्यमेधाधराधरः ।८०। तेजोवृषोद्युतिधरः, सर्वशस्त्रभृतां-
वरः , प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो, नैकश्रृङ्गो गदाग्रजः ८१ ।
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्, चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः । चतुरात्मा
चतुर्भावश् चतुर्वेदविदेकपात् ।८२। समावर्तोऽनिवृ-
त्तात्मा, दुर्जयो दुरतिक्रमः । दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो, दुरावासो
दुरारिहा ।८३। शुभाङ्गोलोकसारङ्गः, सुतन्तुस्तन्तु-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वर्धनः । इन्द्रकर्मामहाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ।८४।
उद्भवःसुंदरःसुंदो, रत्ननाभः सुलोचनः । अर्कोवाजसनः-
श्रृंगी, जयन्तः सर्वविज्जयी ।८५। सुवर्णबिन्दुः (800) ●
अक्षोभ्यः, सर्ववागीश्वरेश्वरः । महाह्रदो महागर्तो, महा-
भूतोमहानिधिः ।८६। कुमुदः कुन्दरः कुन्दः, पर्जन्यः
पावनोनिलः । अमृतांशोऽमृतवपुः, सर्वज्ञः सर्वतोमुखः
।८७। सुलभः सुव्रतः सिद्धः, शत्रुजिच्छत्रुतापनः । न्यग्रो-
धोदुम्बरोऽश्वत्थश्, चाणूरान्ध्र निषूदनः ।८८। सहस्रार्चिः
सप्तजिह्वः, सप्तैधाः सप्तवाहनः । अमूर्तिरनघोऽ-
चिन्त्यो, भयकृद्भयनाशनः ।८९। अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो,
गुणभृन्निर्गुणोमहान् । अधृतः स्वधृतःस्वास्यः, प्राग्वंशो
वंशवर्धनः ।९०। भारभृत्कथितोयोगी, योगीशःसर्व-
कामदः । आश्रमः श्रमणःक्षामः, सुपर्णोवायुवाहनः ।९१।
धनुर्धरो धनुर्वेदो, दण्डो दमयितादमः । अपराजितः
सर्वसहो, नियन्ता नियमोयमः ।९२। सत्त्ववान्सात्विकः
सत्यः, सत्यधर्मपरायणः । अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः, प्रिय-
कृत्प्रीतिवर्धनः ।९३। विहायसगतिर्ज्योतिः, सुरुचिर्हुत-
भुग्विभुः । रविर्विरोचनःसूर्यः सविता रविलोचनः ।९४।
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता, सुखदो नैकजोऽग्रजः । अनिर्विण्णः
सदामर्षी, लोकाधिष्ठानमद्भुतः ।९५। सनात् सनातन-
तमः, कपिलः कपिलव्ययः । (900) ● स्वस्तिदः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वस्तिकृत्स्वस्ति, स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ।९६। अरौद्रः-कुंडलीचक्री, विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगः शब्दसहः, शिशिरः शर्वरीकरः ।९७। अक्रूरःपेशलोदक्षो, दक्षिणः क्षमिणांवरः विद्वत्तमोवीतभयः, पुण्यश्रवणकीर्तनः ।९८। उत्तारणो दुष्कृतिहा, पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः । वीरहा रक्षणः सन्तो, जीवनः पर्यवस्थितः ।९९। अनन्तरूपोऽ-नन्तश्रीर्, जितमन्युर्भयापहः । चतुरस्रोगभीरात्मा, विदिशोव्यादिशोदिशः ।१००। अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।जननो जनजन्मादिर्, भीमोभीम-पराक्रमः १०१। आधारनिलयोधाता, पुष्पहासः प्रजा-गरः । ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः, प्राणदःप्रणवःपणः ।१०२। प्रमाणं प्राणनिलयः, प्राणभृत्प्राणजीवनः । तत्वं तत्व-विदेकात्मा, जन्ममृत्युजरातिगः ।१०३। भूर्भुवः स्वस्त-रुस्तारः, सविता प्रपितामहः । यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा, यज्ञांगो यज्ञवाहनः ।१०४। यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्य, मन्नमन्नाद एवच ।१०५। आत्मयोनिः स्वयंजातो, वैखानः सामगायनः । देवकीनन्दनः स्रष्टा, क्षितीशःपापनाशनः ।१०६। शङ्खभृन्नंदकी चक्री, शार्ङ्गधन्वागदाधरः । रथांगपाणिरक्षोभ्यः, सर्वप्रहरणा-युधः ।१०७। (1000) सर्वप्रहरणायुधः ॐ नम इति ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

● आकाशात्पतितंतोयं, यथागच्छतिसागरम् । सर्वदेव नमस्कारः, केशवंप्रतिगच्छति । एकोविष्णुर्महद्भूतं, पृथग्भूतान्यनेकशः । त्रीन्लोकान्व्याप्यभूतात्मा, भुंक्ते-विश्वभुगव्ययः ॥ वासनाद्वासुदेवस्य, वासितंभुवनत्रयम् । सर्वभूतनिवासोऽसि, वासुदेवनमोऽस्तुते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय विष्णवे नमः ।

\+ \+ \+

भीष्म स्तवराज

यस्य स्मरणमात्रेण, जन्मसंसारबंधनात् । विमुच्यते नमस्तस्मै, विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ नमः समस्तभूतानामादि-भूताय भूभृते । अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

भीष्म उवाच

● आरिराधयिषुःकृष्णं, वाचंजिगदिषाम्यहम् । तया-व्याससमासिन्या, प्रीयतांपुरुषोत्तमः ।१। शुचिशुचि-पदंहंसं, तत्पदं परमेष्ठिनम् । मुक्त्वासर्वात्मनात्मानं, तंप्रपद्येप्रजापतिम् ।२। अनाद्यंतत्परंब्रह्म, नदेवानर्षयो-विदुः । एकोऽयंभगवान्देवो, धातानारायणोहरिः ।३। नारायणादृषिगणास्, तथासिद्धमहोरगाः । देवादेवर्षय-श्चैव, तंविदुःपरमव्ययम् ।४। देवदानवगंधर्वा, यक्षराक्ष-सपन्नगाः । यनजानंतिकोह्येषः, कुतोवाभगवानिति ।५।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यस्मिन्विश्वानिभूतानि, तिष्ठंतिचविशंतिच । गुणभूतानिभूतेशे, सूत्रेमणिगणाइव ।६। यस्मिन्नित्येततेतंतौ, दृढेस्रगिवतिष्ठति । सदसद्ग्रथितंविश्वं, विश्वांगेविश्वकर्मणि ।७। हरिंसहस्रशिरसं, सहस्रचरणेक्षणम् । सहस्रबाहुमुकुटं, सहस्रवदनोज्ज्वलम् ।८। प्राहुर्नारायणंदेवं, यंविश्वस्यपरायणम् । अणीयसामणीयांसं, स्थविष्ठंचस्थवीयसाम् ।९। गरीयसांगरिष्ठंच, श्रेष्ठंचश्रेयसामपि । यंवाकेष्वनुवाकेषु, निषत्सूपनिषत्सुच, गृणंतिसर्वकर्माणं, सत्यंसत्येषुसामसु ।१०। चतुर्भिश्चतुरात्मानं, सत्वस्थंसात्वतांपतिम् । यंदिव्यैर्देवमर्चंति, गुह्यैःपरमनामभिः ।११। यस्मिन्नित्यंतपस्तप्तं, यदंगेष्वनुतिष्ठति । सर्वात्माःसर्ववित्सर्वः, सर्वगःसर्वभावनः ।१२। यंदेवंदेवकीदेवी, वसुदेवादजीजनत् । भूमेश्चब्रह्मणोगुप्त्यै, दीप्तमग्निमिवारणिः ।१३। यमनन्योव्यपेताशी, रात्मानंवीतकल्मषम् । इष्ट्वाऽऽनंत्यायगोविन्दं, पश्यंत्यात्मानमात्मनि ।१४। अतिवाय्विद्रकर्माण, मतिसूर्याग्नितेजसम् । अतिबुद्धींद्रिमात्मानं, तंप्रपद्येप्रजापतिम् ।१५। पुराणेपुरुषंप्रोक्तं, ब्रह्मप्रोक्तंयुगादिषु । क्षयेसंकर्षणंप्रोक्तं, तमुपास्यमुपास्महे ।१६। यमेकं बहुधात्मानं, प्रादुर्भूतमधोक्षजम् । नान्यभक्ता क्रियावंतो, यजंतेसर्वकामदम् ।१७। यंप्राहुर्जगतःकोशं, यस्मिन्सन्निहिताःप्रजाः । यस्मिन् लोकाः-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्फुरंतीमे, जलेशकुनयोयथा ।१८। ऋतमेकाक्षरंब्रह्म, यत्तत्सदसतःपरं । अनादिमध्यपर्यंतं, नदेवानर्षयोविदुः ।१९। य सुरासुरगंधर्वा, ससिद्धर्षिमहोरगाः । प्रयतानित्यमर्चंति, परमंदुःखभेषजम् ।२०। अनादिनिधनंदेव, मात्म योर्निसनातनम् । अवितर्क्यमविज्ञेयं, हरिंनारायणंप्रभुम् ।२१। यंवैविश्वस्यकर्तारं, जगतस्तस्थुषांपतिम् ।
वदंतिजगतोऽध्यक्ष, मक्षरं परमंपदम् ।२२।

● हिरण्यवर्णोयोगर्भो, दितेर्दैत्यनिषूदनः । एकोद्वादशधा जज्ञे, तस्मैसूर्यात्मनेनमः।२३। शुक्लेदेवान् पितॄन्कृष्णे, तर्पयत्यमृतेनयः । यश्चराजाद्विजातीनां, तस्मैसोमात्मनेनमः।२४। महतस्तमसःपारे, पुरुषंह्यतितेजसम्। यंज्ञात्वामृत्यु मत्येति, तस्मैज्ञेयात्मनेनमः ।२५। ऋग्यजुःसामधामानं, दशार्धहविरात्मकम् । यंसप्ततन्तुंतन्वंति, तस्मैयज्ञात्मनेनमः ।२६। यं बृहंतंबृहत्युक्थं, यमिनोयंमहाध्वरे । यंविप्रसंघागायंति, तस्मैवेदात्मनेनमः ।२७। चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च, द्वाभ्यांपंचभिरेवच । हूयतेचपुनर्द्वाभ्यां, तस्मैहोमात्मनेनमः ।२८। यःसुपर्णो यजुर्नाम, छंदोगात्रस्त्रिवृच्छिराः । रथंतरंबृहत्साम, तस्मैस्तोत्रात्मनेनमः ।२९। यःसहस्रसमेसत्रे, यज्ञेविश्वसृजामृषिः । हिरण्यपक्षःशकुनिस्, तस्मैताक्ष्यर्यात्मनेनमः ।३०। पदांग-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

संधिपर्वाणं, स्वरव्यंजनभूषणम् । यमाहुश्चाक्षरंनित्यं, तस्मैवागात्मनेनमः ।३२। यज्ञांगोयोवराहोवैं, भूत्वागामुज्जहारह । लोकत्रयहितार्थाय, तस्मैवीर्यात्मनेनमः ।३३। यःशेतेयोगमास्थाय, पर्यंकेनागभूषिते । फणासहस्ररचिते, तस्मैनिद्रात्मने नमः ।३४। यश्चिनोतिसतांसेतुं, ऋतेनामृतयोनिना । धर्मार्थं व्यवहारार्थं, तस्मैसत्यात्मनेनमः ।३५। यंपुनर्धर्मचरणाः, पृथग्धर्मफलैषिणः । पृथग्धर्मैःसमर्चन्ति, तस्मैधर्मात्मनेनमः ।३६। यतःसर्वेप्रसूयन्ते, ह्यनंगाच्चैवदेहिनः । उन्मादःसर्वभूतानां, तस्मैकामात्मनेनमः ।३७। यत्तव्द्यक्तस्थमव्यक्तं, विचिन्वंतिमहर्षय.। क्षेत्रेक्षेत्रज्ञमासीनं, तस्मैक्षेत्रात्मनेनमः ।३८। यंत्रिधात्मात्मा मस्थं, बृतंषोडशभिर्गुणैः । प्राहुःसप्तदशंसांख्यास् तस्मैसांख्यात्मनेनमः ।३९। यंविनिद्राजितश्वासाः, शांतादांताजितेन्द्रियाः । ज्योतिःपश्यन्तियुंजानाः, तस्मैयोगात्मनेनमः ।४०। अपुण्यपुण्योपरमे, यंपुनर्भवनिर्भयाः । शांताःसंन्यासिनोयांति, तस्मैमोक्षात्मनेनमः ।४१। योऽसौयुगसहस्रांते, प्रदीप्तार्चिर्विभावसुः । संक्षोभयतिभूतानि, तस्मैघोरात्मनेनमः ।४२। संभक्ष्यसर्वभूतानि कृत्वाचैकार्णवंजगत् । बालःस्वपितियश्चैकस्, तस्मैमायात्मनेनमः ।४३। अजस्यनाभ्यांसंभूतं, यस्मिन्विश्वंप्रतिष्ठितम् ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पुष्करंपुष्कराक्षस्य, तस्मैपद्मात्मनेनमः ।४४। सहस्रशिरसे-
चैव, पुरुषायामितात्मने । चतुःसमुद्रपर्यंके योगनिद्रात्मने-
नमः ।४५। यस्यकेशेषुजीमूता, नद्यःसर्वांगसंधिषु । कुक्षो-
समुद्राश्चत्वारास्, तस्मैतोयात्मनेनमः ।४६। यस्मात्सर्वा-
प्रसूयन्ते, सर्गप्रलयविक्रियाः । यस्मिंश्चैवप्रलीयन्ते,
तस्मैहेत्वात्मनेनमः ।४७। योनिषण्णोभवेद्रात्रौ, दिवा-
भवतिधिष्ठितः। इष्टानिष्टस्यचद्रष्टा, तस्मैद्रष्टात्मने-
नमः ।४८। अकुंठं सर्वकार्येषु, धर्मकार्यार्थमुद्यतम् ।
वैकुंठस्यहितद्रूपं, तस्मैकार्यात्मनेनमः ।४९। विभज्यपंच-
धात्मानं, वायुभूतःशरीरगः । यश्चेष्टयतिभूतानि, तस्मै-
वाय्वात्मनेनमः ।५०। ब्रह्मवक्त्रंभुजौक्षत्रं, कृत्स्नमूरूदरं-
विशः । पादौयस्याश्रिताःशूद्रास् तस्मैवर्णात्मनेनमः ५१।
युगेष्वावर्तमानेषु, मासर्त्वयनहायनैः । सर्गप्रलययोःकर्ता,
तस्मै कालात्मनेनमः ।५२। यस्याग्निरास्यंद्यौर्मूर्धा,
खंनाभिश्चरणौक्षितिः सूर्यश्चक्षुर्दिशःश्रोत्रे, तस्मैलोका-
त्मनेनमः ।५३। परःकालातपरोयज्ञात् परात्परतरोहियः।
अनादिरादिर्विश्वस्य, तस्मैविश्वात्मनेनमः ।५४। विषये-
वर्तमानोयस्, तं वैशेषिक निर्गुणैः । प्राहुर्विषयगोप्तारं,
तस्मैगोप्त्रात्मनेनमः ।५५। अन्नपानेंधनमयो, रसप्राण-
विवर्धनः । योधारयतिभूतानि, तस्मैप्राणात्मनेनमः ।५६।
पिंगेक्षणसटंयस्य, रूपं दंष्ट्रानखायुधम् । दानवेंद्रांत-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करणं, तस्मैदृप्तात्मनेनमः ।५७। रसातलगतःश्रीमान् अनंतोभगवान्विभुः। जगद्धारयतेकृत्स्नं, तस्मैवीर्यात्मनेनमः ।५८। योमोहयतिभूतानि, स्नेहपाशानुबन्धनैः। सर्गस्यरक्षणार्थाय, तस्मैमोहात्मनेनमः ।५९। भूतलातलमध्यस्थो, हत्वातुमधुकैटभौ। उद्धृतायेनवैवेदास्, तस्मैमत्स्यात्मनेनमः ।६०। ससागरवनांबिभ्रत्, सप्तद्वीपांवसुंधराम्। योधारयतिपृष्ठेन तस्मैकूर्मात्मनेनमः ।६१। एकार्णवेहिमग्नांगां, वाराहंरूपमास्थितः। उद्धारमहींयोऽसौ, तस्मैक्रोडात्मनेनमः ।६२। नारसिंहंवपुःकृत्वा, यस्त्रैलोक्यभयंकरम्। हिरण्यकशिपुजघ्ने, तस्मैसिंहात्मनेनमः ।६३। वामनंरूपमास्थाय, बलिसंयम्यमायया। इमे क्रांतास्त्रयोलोकास्, तस्मैक्रांतात्मनेनमः ।६४। जमदग्निसुतोभूत्वा, रामःपरशुधृग्विभुः। सहस्रार्जुंनहंतैव, तस्माउग्रात्मनेनमः ।६५। रामोदाशरथिर्भूत्वा, पौलस्त्यकुलनंदनम्। जघानरावणंसंख्ये, तस्मैक्षत्रात्मनेनमः ।६६। वसुदेवसुतः श्रीमान्, वासुदेवो जगत्पतिः। जहार वसुधाभारं, तस्मैकृष्णात्मनेनमः ।६७। बुद्धरूपंसमास्थाय, सर्वरूपपरायणः। मोहयन्सर्वभूतानि, तस्मैमोहात्मनेनमः ।६८। हनिष्यतिकलेरंते, म्लेच्छांस्तुरगवाहनः। धर्मसंस्थापनार्थाय, तस्मैकल्क्यात्मनेनमः ।६९। आत्मज्ञानमिदंज्ञानं, ज्ञात्वापंचस्ववस्थितः। यंज्ञानेनाधिगच्छंति, तस्मैज्ञानात्मनेनमः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

।७०। अप्रमेयशरीराय, सर्वतोबुद्धिचक्षुषे । अपारपरि-
मेयाय, तस्मैदिव्यात्मनेनमः ।७१। जटिनेदंडिने नित्यं,
लंबोदरशरीरिणे । कमंडलुनिषंगाय, तस्मैब्रह्मात्मनेनमः
।७२। शूलिनेत्रिदशेशाय, त्र्यंबकायमहात्मने । भस्म
दिग्धोर्ध्वलिंगाय, तस्मैरुद्रात्मनेनमः ।७३। चन्द्रार्धकृत-
शीर्षाय व्यालयज्ञोपवीतिने । पिनाकशूलहस्ताय, तस्मा-
उग्रात्मनेनमः ।७४। पंचभूतात्मभूताय, भूतादिनि-
धनायच । अक्रोधद्रोह मोहाय, तस्मैशांतात्मनेनमः ।७५।
यस्मिन् सर्वेयतः सर्वे, यःसर्वेसर्वतश्चयः । यश्चसर्वमयो-
देवस्, तस्मै सर्वात्मनेनमः ।७६। विश्वकर्मन्नमस्तेऽस्तु,
विश्वात्माविश्वसंभवः । अपवर्गस्थभूतानां, पंचानांपरतः-
स्थितः ।७७। नमस्तेत्रिषुलोकेषु, नमस्तेपरतस्त्रिषु ।
नमस्तेत्रिषुसर्वेषु, त्वंहिसर्वमयोनिधिः ।७८। नमस्ते-
भगवन्विष्णो, लोकानांप्रभवाप्यय । त्वंहिकर्ताहृषीकेशः
संहर्ताचापराजितः ।७९। तेनपश्यामिभगवन्, दिव्येषु-
त्रिषुवर्त्मसु । तच्चपश्यामितत्वेन, यत्तेरूपंसनातनम् ।८०।
दिवंते शिरसाव्याप्तं, पद्भ्यांदेवीवसुंधरा । विक्रमेण-
त्रयोलोकाः पुरुषोसिसनातनः ।८१। दिशोभुजारवि-
श्चक्षुर्, वीर्येशुक्रःप्रजापतिः । सप्तमार्गानिरुद्धास्ते, वायो-
रमिततेजसः ।८२। अतसी पुष्पसंकाशं, पीतकौशेय-
वाससम् । येनमस्यंतिगोविंदं, नतेषांविद्यतेभयम् ।८३।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नमोनरकसंत्रास, रक्षामंडलकारिणे । संसारनिम्नगावर्त, तरिकाष्ठायविष्णवे ।८४। नमोब्रह्मण्यदेवाय, गोब्राह्मण-हितायच। जगद्धितायकृष्णाय, गोविंदायनमोनमः ।८५। प्राणकांतारपाथेयं, संसारच्छेदभेषजम् । दुःखशोक परि-त्राणं, हरिरित्यक्षरद्वयम् ।८६। यथाविष्णुमयंसत्यं, यथा-विष्णुमयंजगत् । यथाविष्णुमयंसर्वम् पापंनाशयतेतथा ।८७। त्वांप्रपन्नायभक्ताय, गतिमिष्टांजिगीषवे । यच्छ्रेयः-पुंडरीकाक्ष,तद्ध्यायस्वसुरेश्वर ।८८। इतिविद्यतपो-योनिर्, अयोनिर्विष्णुरीडितः।वाग्यज्ञेनार्चितोदेवः, प्रीय-तांमेजनार्दनः ।८९। नारायणपरंब्रह्म, नारायणपरंतपः । नारायणपरंचेदं, सर्वंनारायणात्मकम् ।९०।

एतावदुक्त्वावचनं, भीष्मस्त्वाद्गतमानसः । नमइत्येव-कृष्णाय, प्रणाममकरोत्तदा ।।९१।। अभिगम्यतुयोगेन, भक्तिः भीष्मस्य माधवः त्रैलोक्यदर्शनं ज्ञानं दिव्यं दत्वाययौहरिः ।९२।

\+ \+ \+

अनुस्मृति–

श्रीभगवानुवाच ।

हंततेकथयिष्यामि, इमांदिव्यामनुस्मृतिम् । मरणे मामनुस्मृत्य, प्राप्नोतिपरमांगतिम् ।१। यामधीत्य-प्रयाणेतुं, मद्भावायोपपद्यते । ॐ कारमग्रतःकृत्वा,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मांनमस्कृत्यनारद ।२। एकाग्रः प्रयतोभूत्वा, इमंमंत्र-
मुदीरयेत् । ॐ नमोभगवते, वासुदेवायइत्ययम् ।३।
अवशेनापियन्नाम्नि, कीर्तितेसर्वपातकैः । पुमान्विमुच्यते-
सद्यः, सिंहत्रस्तैर्मृगैरिव ।४। क्षराक्षरविसृष्टस्तु, प्रोच्यते-
पुरुषोत्तमः । अव्यक्तंशाश्वतंदेवं, प्रभवंपुरुषोत्तमम् ।५।
प्रपद्येपुंडरीकाक्षं, देवंनारायणंहरिम्। लोकनाथंसहस्राक्ष,
मक्षरं परमंपदम् ।६। भगवंतंप्रपन्नोस्मि, भूतभव्य-
भवत्प्रभुम्। स्रष्टारंसर्वलोकाना, मनंतंविश्वतोमुखम् ।७।
पद्मनाभंहृषीकेशं, प्रपद्येसत्यमच्युतम् । हिरण्यगर्भममृतं,
भूगर्भंतमसःपरम् ।८। प्रभोःप्रभुमनाद्यंच, प्रपद्येतंरवि-
प्रभम् । सहस्रशीर्षकंदेवं, महर्षेः सत्त्वभावनम् ।९।
प्रपद्येसूक्ष्ममचलं, वरेण्यमनघंशुचिम् । नारायणंपुराणेशं,
योगावासंसनातनम् ।१०। संयोगंसर्वभूतानां, प्रपद्येध्रुव-
मीश्वरम् । यःपुराप्रलयेप्राप्ते, नष्टेस्थावरजंगमे ।११।
ब्रह्मादिषुप्रलीनेषु, नष्टेलोकेचराचरे । एकस्तिष्ठति-
विश्वात्मा, समे विष्णुःप्रसीदतु ।१२ यःप्रभुःसर्वलोकानां,
येनसर्वमिदंततम् । चराचरगुरुर्देवः, समेविष्णुःप्रसीदतु
।१३। आभूतसंप्लवेचैव, प्रलीने प्रकृतौ महान् । योऽ-
वतिष्ठतिविश्वात्मा, समेविष्णुःप्रसीदतु ।१४। येनक्रांता-
स्त्रयोलोका, दानवाश्चवशीकृताः । शरण्यःसर्वलोकानां,
समेविष्णुःप्रसीदतु ।१५। यस्यहस्तेगदाचक्रं, गरुडोयस्य-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वाहनम् । शंखःकरतलेयस्य, समेविष्णुःप्रसीदतु ।१६। कार्यंक्रियाचकरणं, कर्ताहेतुःप्रयोजनम् । अक्रियाकरणे-कार्ये, समेविष्णुःप्रसीदतु ।१७। चतुर्भिश्चचतुर्भिश्च, द्वाभ्यांपंचभिरेवच । हूयते चपुनर्द्वाभ्यां, समेविष्णुः प्रसीदतु ।१८। शमीगर्भस्ययोगर्भस्, तस्यगर्भस्ययोरिपुः । रिपुगर्भस्ययोगर्भः, समेविष्णुःप्रसीदतु ।१९। अग्निसोमार्कताराणां, ब्रह्मरुद्रेंद्रयोगिनाम् । यस्तेजयतितेजांसि, समेविष्णुःप्रसीदतु ।२०। पर्जन्यःपृथिवीसस्यं, कालोधर्मः क्रियाफलम् । गुणाकारःसमेबभ्रुर्, वासुदेवः प्रसीदतु ।२१। योगावासनमस्तुभ्यं, सर्वावासवरप्रद । हिरण्यगर्भयज्ञांग, पंचगर्भनमोऽस्तुते ।२२। चतुर्भूतपरं धाम, लक्ष्म्यावाससदाच्युत । शब्दादिवासनान्योऽसि, वासुदेवः प्रधानकृत् ।२३। अजःसंगमनः पार्थो, ह्यमूर्तिर्विश्वमूर्तिधृक् । श्रीःकीर्तिःपंचकालज्ञो, नमस्ते ज्ञानसागर ।२४। अव्यक्ताद्व्यक्तमुत्पन्न, मव्यक्ताद्यःपरात्परः । यस्मात्परतरंनास्ति, तमस्मिशरणंगतः ।२५। चिंतयंतोह्यजं नित्यं, ब्रह्मेशानादयःसुरा। निश्चयंनाधिगच्छंति, तमस्मि शरणंगतः ।२६। जितेन्द्रिया जितात्मनो, ज्ञानध्यानपरायणाः। यंप्राप्यननिवर्तंते, तमस्मिशरणंगतः ।२७। एकांशेनजगत्कृत्स्न, मवष्टभ्यस्थितःप्रभुः । अग्राह्योनिर्गुणोनित्यस्, तमस्मिशरणंगतः ।२८। सोमार्काग्निमयं-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तेजो, याचतारामयीद्युतिः। दिविसंजायतेतेजः, समहात्मा-
प्रसीदतु ।२९। गुणात्मानिर्गुणश्चान्यो रश्मिवांश्चतनो-
ह्यजः । सूक्ष्मःसर्वगतोदेहः, समहात्माप्रसीदतु ।३०।
अव्यक्तंसदधिष्ठान, मचिंत्यंतमसःपरम् । प्रकृतिः प्रकृतिं-
भुंक्ते, समहात्माप्रसीदतु ।३१। क्षेत्रज्ञःपंचधाभुंक्ते प्रकृतिं
पंचभिर्मुखैः ।। महागुणांश्चयोभुंक्ते, समहात्माप्रसीदतु
।३२। सांख्ययोगाश्चयेचान्ये, सिद्धाश्चपरमर्षयः । यं
विदित्वाविमुच्यन्ते, स महात्माप्रसीदतु ।३३। अतीन्द्रिय
नमस्तुभ्यं, लिंगैर्व्यक्तैर्नमीयसे । ये च त्वां नाभिजानंति,
तमस्मिशरणंगतः ।३४। कामक्रोधविनिर्मुक्ता, रागद्वेष-
विवर्जिताः। अनन्यभक्ताजानंति नपुनर्नारकीजनाः।३५।
एकांतिनोहिनिर्द्वंद्वा, निराशाःकर्मकारिणः । ज्ञानाग्नि-
दग्धकर्माणस्, त्वांविशंतिमनस्विनः ।३६। अशरीरं-
शरीरस्थं, समंसर्वेषुदेहिषु । पापपुण्यविनिर्मुक्ता, भक्ता-
स्त्वांपर्युपासते ।३७। अव्यक्तबुध्यहंकार, मनोभूतेन्द्रि-
याणिच । त्वयितानिनतेषुत्वं, तेषुतानि नतेत्वयि ।३८।
एकत्वायचनानन्यं, येविदुर्यांतितेपरम्। समत्वमिहकांक्षेहं
भक्त्यावैनान्यचेतसा ।३९। चराचरमिदं सर्वं, भूतग्रामं-
चतुर्विधम् । त्वयितन्तौचततप्रोतं, सूत्रेमणिगणाइव
।४०। स्रष्टाभोक्तासिकूटस्थो, ह्यचिंत्यःसर्वसंज्ञितः ।
अकर्ता हेतुरहितः । पृथगात्माव्यवस्थितः।४१। नमेंभूते-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

षुसंयोगः, पुनर्भवतुजन्मनि । अहंकारेणबुध्द्यावा, नमे-
योगस्त्रिभिर्गुणैः ।४२। नमेधर्मोह्यधर्मोवा, नारंभोजन्म-
वापुनः । जरामरणमोक्षार्थं, त्वांप्रपन्नोऽस्मिसर्वगम् ।४३।
विषयैरिन्द्रियैश्चापि, नमे भूयःसमागमः । ईश्वरोऽसि-
जगन्नाथ, किमंतःपरमुच्यते ।। भक्तानांयद्धितंदेव, तत्तेहिं-
त्रिदशेश्वर ।४४।

पृथिवींयातुमेघ्राणं, यातुमेरसनंजलम् । रूपं-
हुताशनंयातु, स्पर्शोमेयातुमारुतं ।४५। श्रोत्रमाकाशम-
भ्येतु मनोवैकारिकं पुनः । इन्द्रियाणिगुणान्यांतु स्वेषु-
स्वेषुचयोनिषु।४६। पृथिवीयातुसलिल, मापोऽग्निमनलोऽ-
निलम् । वायुराकाशमभ्येतु, मनश्चाकाशमेवच ।४७।
अहंकारंमनोयातु, मोहनंसर्वदेहिनाम् । अहंकारस्तथा-
बुद्धि, बुद्धिरव्यक्तमेवच ।४८। प्रधानंप्रकृतियातु, गुण-
साम्येव्यवस्थिते । विसर्गःसर्वकरणैर्, गुणभूतैश्चमेभवेत्
।४९। सत्वंरजस्तमश्चैव, प्रकृतिप्रविशंतुमे । नैष्कैवल्य-
पदंदेव, कांक्षेऽहंतेपरंतप ।५०। एकीभावस्त्वयामेऽस्तु,
नमेजन्मभवेत्पुनः । नमोभगवतेतस्मै, विष्णवेप्रभविष्णवे
।५१। त्वद्बुद्धिस्त्वद्गतप्राणस्, त्वद्भक्तस्त्वत्परायणः ।
त्वामेवाहंस्मरिष्यामि, मरणेपर्यवस्थिते ।५२। पूर्वदेहे-
कृतायेमे, व्याधयःप्रविशंतुमाम् । अर्दयंतुचमांदुःखान्,
ऋणंमेप्रतिमुच्यताम् ।५३। अनुध्येयोऽसिमेदेव, नमेजन्म-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भवेत्पुनः । अतोब्रवीमिकर्माणि, ऋणंमेनभवेदिति ।५४।
उपतिष्ठंतुमांसर्वे, व्याधयःपूर्वंवंचिताः । अनृणोगंतु-
मिच्छामि, तद्विष्णोःपरमंपदम् ।५५। अहंभगवतस्तस्य,
ममवासःसनातनः । तस्याहंनप्रणश्यामि, सचमेनप्रणश्यति
।५६। कर्मेन्द्रियाणिसंयम्य, पंचभूतेन्द्रियाणिच । दशेन्द्रि-
याणिमनसि, अहंकारंतथामनः ।५७। अहंकारस्तथाबुद्धौ,
बुद्धिमात्मनि योजयेत् । आत्मबुद्धींद्रियंपश्येद्, बुद्ध्वा-
बुद्धेःपरात्परम् ।५८। एवंबुद्धेःपरंबुद्ध्वा, संस्तभ्यात्मा-
नमात्मना । ततोबुद्धेः परं बुद्ध्वा, लभतेनपुनर्भवम् ।५९।
ममायमितितस्याहं, येनसर्वमिदंततम् । आत्मन्यात्मनि-
संयोज्य, परात्मानमनुस्मरेत् ।६०। नमोभगवतेतस्मै,
देहिनांपरमात्मने । नारायणायभक्ताय, अकनिष्ठाय-
शाश्वते ॥ हृदिस्थायचभूतानां, सर्वेषांचमहात्मने ।६१।

● इमामनुस्मृतिदिव्यां, वैष्णवींपापनाशिनीम् ।
स्वपन्वि बुद्धश्चपठेद्, यत्नेनचसमभ्यसेत् ।६२। मरणे-
समनुप्राप्ते, यदेकंमामनुस्मरेत् । अपिपापसमाचारः,
सयातिपरमांगतिम् ।६३। यद्यहंकारमाश्रित्य, यज्ञदानतपः-
क्रियाः । कुर्वंन्फलमवाप्नोति, पुनरावर्तनंचतत् ।६४।
अभ्यर्चयन्पितॄन्देवान्, पठन्जुह्वन्बलिंददत् । ज्वलदग्नौ-
स्मरेद्योमां, लभतेपरमांगतिम् ।६५। यज्ञोदानंतपश्चैव,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पावनानिमनीषिणाम् । यज्ञंदानंतपस्तस्मात्, कुर्याद्राग-विवर्जितः ।६६। पौर्णमास्याममावास्यां, द्वादश्यांचत-थैवच । श्रावयेच्छ्रद्दधानश्च, मद्भक्तश्चविशेषतः ।६७। नमइत्येवयोब्रूयात्, मद्भक्तःश्रद्धयान्वितः । तस्याक्षयो-भवेल्लोकः, श्वपाकस्यापि नारद ।६८। किंपुनर्येभजंतेमां, साधका विधिपूर्वकम् । श्रद्धावंतोयतात्मानस्, तेयांति-परमांगतिम् ।६९। कर्माण्याद्यंतवंतीह, मद्भक्तोऽ-नंतमश्नुते । मामेवतस्माद्देवर्षे, ध्याहिनित्यमतंद्रितः ।७०। अज्ञानांचैवयोज्ञानं, दद्याद्धर्मोपदेशतः । कृत्स्नांवापृथिवी-दद्यात् । तेनतुल्यंनतत्फलम् ।७१। तस्मात्प्रदेयंसाधुभ्यो, जपंबंधभयापहम् । अवाप्स्यसिततःसिद्धिं, प्राप्स्यसेच-पदंमम ।७२। अश्वमेधसहस्रैश्च, वाजपेयशतैरपि । नासौ-पदमवाप्नोति, मद्भक्तैर्यदवाप्यते ।७३।

● श्रुत्वैवं नारदोवाक्यं, दिव्यं नारायणोदितं ।
अत्यंतं भक्तिमान् देव, मेकांतित्वमुपेयिवान् ॥

\+ \+ \+

गजेन्द्रमोक्ष–

गजेन्द्रउवाच ।

● ॐ नमोमूलप्रकृतये, अजितायमहात्मने । अना-श्रयाय देवाय, निःस्पृहायनमोनमः ।१। नमआद्याय-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बीजाय, आर्षेयाय प्रवर्तिने। अनंतायचनैकाय, अव्यक्ताय-नमोनमः ।२। नमो गुह्यायगूढाय, गुणायगुणधर्मिणे। अतर्क्यायाप्रमेयाय, अतुलाय नमोनमः ।३। नमःशिवाय-शांताय, निश्चयायययशस्विने। सनातनायपूर्वाय, पुराणाय-नमोनमः ।४। नमोजगत्प्रतिष्ठाय, गोविंदायनमोनमः। नमोदेवाधिदेवाय, स्वभावायनमोनमः ।५। नमोऽस्तुपद्म-नाभाय, सांख्ययोगोद्भवायच। विश्वेश्वरायदेवाय, शिवायहरयेनमः ।६। नमोऽस्तुतस्मैदेवाय, निर्गुणाय-गुणात्मने। नारायणायदेवाय, देवानांपतयेनमः ।७।

● नमोनमःकारणवामनाय, नारायणायामितवि-क्रमाय। श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय, नमोऽस्तुतस्मैपुरुषो-त्तमाय ।८। गुह्यायवेदनिलयायमहोदराय, सिंहायदैत्य-निधनायचतुर्भुजाय। ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिचारणसंस्तुताय, देवोत्तमायवरदायनमोऽच्युताय ।९। नागेन्द्रभोगशयना-सनसुप्रियाय, गोक्षीरहेमशुकनीलघनोपमाय। पीतांबराय-मधुकैटभनाशनाय, विश्वायचारुमुकुटाय, नमोऽक्षराय ।१०। नाभिप्रजातकमलासनसंस्तुताय, क्षीरोदकार्णव-निकेतयशोधराय। नानाविचित्रमुकुटांगदभूषणाय, योगे-श्वरायविरजायनमोवराय ।११। भक्तिप्रियायवरदीप्ति-सुदर्शनाय, फुल्लारविंदविपुलायतलोचनाय। देवेन्द्र-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विघ्नशमनोद्यतपौरुषाय, नारायणायवरदायनमोऽच्युताय
।१२। नारायणायपरलोकपरायणाय, कालायकालकम-
लायतलोचनाय । रामायरावणविनाशकृतोद्यमाय, धीरा-
यधीरतिलकायनमोवराय ।१३। पद्मासनाय मणिकुंडल-
भूषणाय, कंसांतकायशिशुपालविनाशनाय । गोवर्धना-
यसुरशत्रुनिकृंतनाय, दामोदरायविरजायनमोवराय ।१४
ब्रह्मायनायत्रिदशायनाय, लोकैकनाथायहितात्मकाय ।
नारायणायार्ति विनाशनाय महावराहायनमस्करोमि
।१५। कूटस्थमव्यक्तमचिंत्यरूपं, नारायणंकारणमादि-
देवम् । युगांतशेषंपुरुषंपुराणं, तं वासुदेवंशरणंप्रपद्ये ।
।१६। अदृश्यमच्छेद्यमनंतमव्ययं, महर्षयो ब्रह्ममयंसना-
तनम् । विदंतियंवैपुरुषंपुरातनं, तं वासुदेवंशरणंप्रपद्ये
।१७। उत्तिष्ठतस्तस्यजलोरुकक्षेर्, महावराहस्यमहीं-
विदार्य विधुन्वतोवेदमयं शरीरम् । लोकांतरस्थं मुनयो-
गृणंति ।१८। योगेश्वरंचारुविचित्रमौलिं, ज्ञेयंसमस्तं-
प्रकृतेःपरस्थम् । क्षेत्रज्ञमात्मप्रभवंवरेण्यं, तं वासुदेवं
शरणंप्रपद्ये ।१९। कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं, हिरण्यबाहुं-
वरपद्मनाभम् । महाबलंवेदनिधिंसुरोत्तमं तंवासुदेवंशरणं-
प्रपद्ये ।२०। किरीटकेयूरमहार्हनिष्कैर्, मण्युत्तमालंकृत-
सर्वगात्रम् । पीतांबरंकांचनचित्रनद्ध, मालाधरं केशव
मभ्युपैमि ।२१। भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठं, योगात्मकं-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सांख्यविदांवरिष्ठम् । आदित्यचन्द्राग्निवसुप्रभावं, प्रभुं प्रपद्येऽच्युतमात्मवंतम् ।२२। यदक्षरं ब्रह्म वदंतिसर्वगं, निशम्ययन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते । तमीश्वरंयुक्तमनुत्तमैर्गुणैः, सनातनंलोकगुरुंनमामि ।२३।

नमस्तस्मैवराहाय, लीलयोद्धरतेमहीम् । खुरमध्यगतोयस्य, मेरुः खुरखुरायते ।२४। श्रीवत्सांकंमहादेवं देवगुह्यमनूपमम् । प्रपद्ये सूक्ष्ममचलं, वरेण्यमभयप्रदम् ।२५। प्रभवंसर्वभूतानां निर्गुणं परमेश्वरम् । प्रपद्येमुक्तसंगानां, यतीनांपरमांगतिम् ।२६। प्रभवंतंगुणाध्यक्ष, मक्षरंपरमंपदम् । शरण्यंशरणार्तानां प्रपद्येभक्तवत्सलम् ।२७। त्रिविक्रमंत्रिलोकेशं, सर्वेषांप्रपितामहम् । योगात्मानंमहात्मानं, प्रपद्येऽहंजनार्दनम् ।२८। आदिदेवमजंविष्णुं, व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् । नारायणमणीयांसं, प्रपद्येब्राह्मणप्रियं।२९। अकूपारायदेवाय नमःसर्वमहाद्युते । प्रपद्येदेवदेवेश, मणीयांसमणोःसदा ।३०। अेकायलोकनाथाय, परतःपरमात्मने । नमःसहस्रशिरसे, अनंतायनमोनमः ।३१। तमेवपरमंदेवं, ऋषयोवेदपारगाः । कीर्तयंतिचसर्वेवै, ब्रह्मादीनांपरायणम् ।३२। नमस्तेपुंडरीकाक्ष, भक्तानामभयंकर । सुब्रह्मण्यनमस्तेऽस्तु, त्राहिमांशरणागतम् ।३३। तावद्भ्रवतिमेदुःखं, चिन्तासंसारसागरे । यावत्कमलपत्राक्षं, नस्मरामिजनार्दनम् ।३४।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भक्तिंतस्यतुसंचिंत्य, नागस्यामोघसंस्तवात् । प्रीतिमानभवद्राजन्, श्रुत्वाचक्रगदाधरः ३५। सांनिध्यं-कल्पयामास तस्मिन्सरसिलोकधृक् । मोचयामासनागेन्द्रं पाशेभ्यःशरणागतम् ।३६।

दृढबद्धधर्ममूलो, वेदस्कंधःपुराणशाखाढ्यः । क्रतु-कुसुमो मोक्षफलो, मधुसूदनपादपोजयति ।३७। नमो ब्रह्मण्यदेवाय, गोब्राह्मणहितायच । जगद्धिताकृष्णाय, गोविंदायनमोनमः ।३८। आकाशात्पतितं तोयं, यथा-गच्छतिसागरम् । सर्वदेवनमस्कारः, केशवं प्रतिगच्छति ।३९। वेदेरामायणेचैव पुराणेभारतेतथा । आदौमध्ये-तथाचांते, हरिःसर्वत्रगीयते ।४०। सर्वरत्नमयोमेरुः, सर्वाश्चर्यमयं नभः । सर्वतीर्थमयीगंगा, सर्वदेवमयोहरिः ।४१। गीतासहस्रनामैव, स्तवराजोह्यनुस्मृतिः । गजेंद्र-मोक्षणंचैव, पंचरत्नानिभारते ।४२।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जटाकटाह संभ्रम भ्रमत् निलिंप निर्झरी ।
विलोल वीचि वल्लरी विराजमान मूर्धनि ।
धगत् धगत् धगत् ज्वलत् ललाट पट्ट पावके ।
किशोरचन्द्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥

धराधरेन्द्र नंदिनी विलास बन्धु बन्धुर ।
स्फुरत् दिगन्त सन्तति प्रमोदमान मानसे ।
कृपा कटाक्ष धोरणी निरुद्ध दुर्धरापदि ।
क्वचित् चिदम्बरे मनः प्रमोदमेतु वस्तुनि ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुद्रक :
योगमीमांसा मुद्रणालय, लोनावला ४१० ४०३.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida